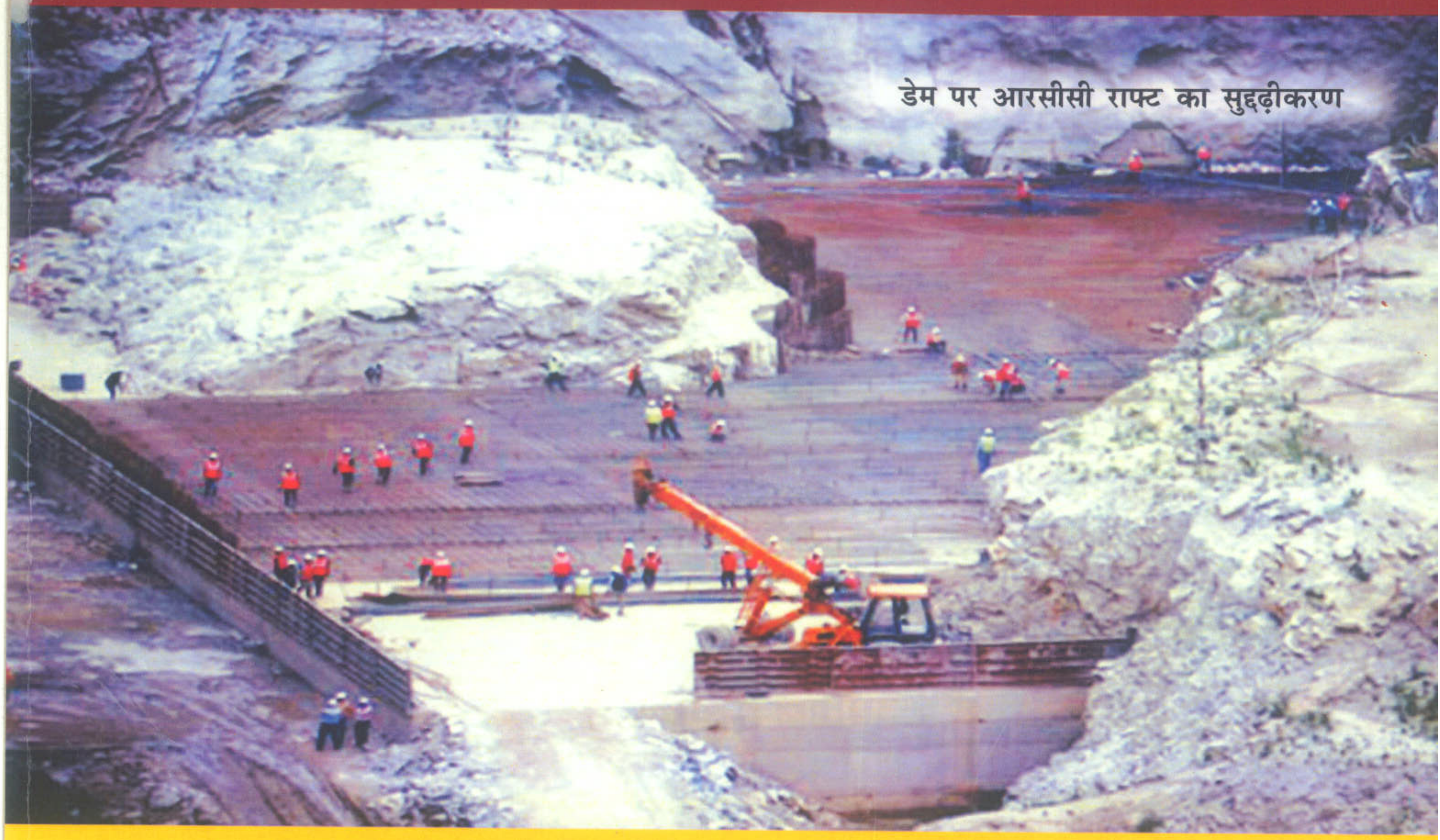

वाप्कोस दर्पण

त्रैमासिक गृह पत्रिका अंक-85 (अप्रैल-जून, 2017)

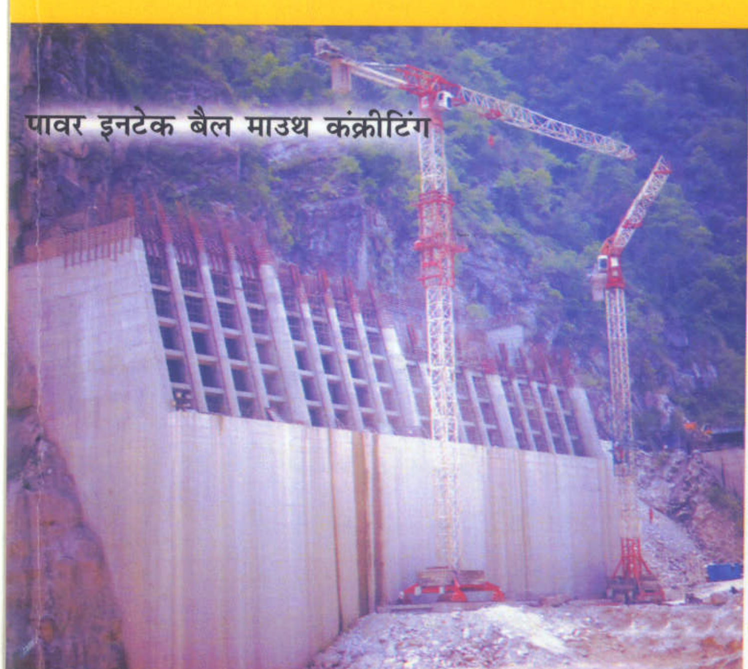

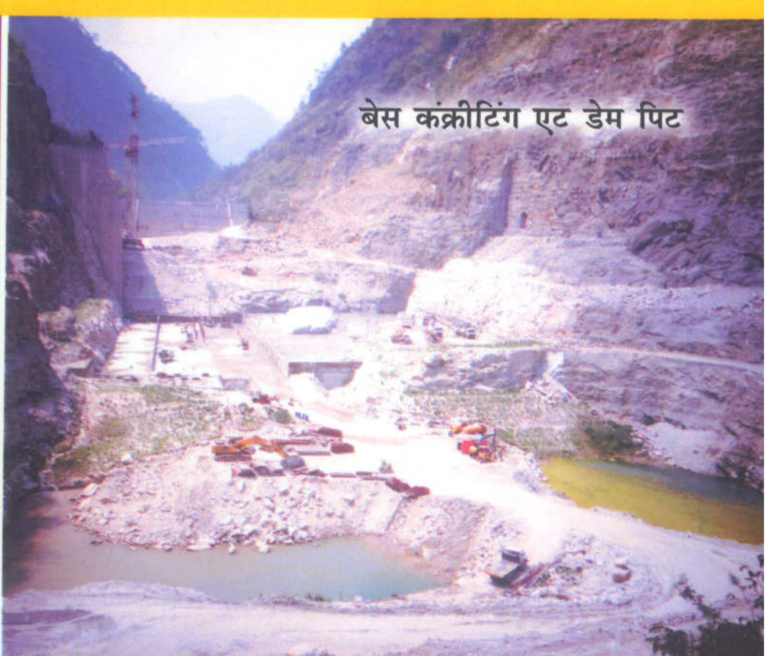

पीएचईपी-II, भूटान

भारत के माननीय राष्ट्रपति 'स्कोप सराहनीय पुरस्कार - कार्पोरेट गवर्नेंस' श्री अनंत जी. गीते, माननीय भारी उद्योग व लोक उद्यम केन्द्रीय मंत्री की उपस्थिति में प्रदान करते हुए

भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी वाप्कोस प्रदर्शनी देखते हुए

महामहिम डॉ. ओक राबून, ग्रामीण विकास मंत्री, कम्बोडिया सरकार
श्री आर.के. गुप्ता, अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, वाप्कोस को प्रशंसा-पत्र प्रदान करते हुए

वाप्कोस दर्पण

अप्रैल-जून, 2017 अंक-85

संरक्षक
आर.के.गुप्ता
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

तकनीकी संपादन सलाहकार
अमिताभ त्रिपाठी, महा प्रबंधक

संपादन मण्डल
अनुपम मिश्रा, कार्यकारी निदेशक एवं अध्यक्ष, विराकास
डा.आर.पी.दूबे, वरि.महा प्रबंधक
अमिताभ त्रिपाठी, महा प्रबंधक

संपादक
निम्मी भट्ट,
प्रमुख (रा.भा.का.)

उप संपादक
डी.के.सेठी
उप प्रबंधक (रा.भा.का.)

सहयोग
गीता शर्मा, सहायक प्रबंधक
शारदा रानी, वरि.सहायक

(पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं। संपादन मण्डल का इसके लिए सहमत होना अनिवार्य नहीं है।)

केवल आन्तरिक वितरण हेतु

इस अंक में	पृष्ठ सं0
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक की कलम से	1
संबोधन – कार्यकारी निदेशक एवं अध्यक्ष, विराकास	2
सम्पादकीय – प्रमुख (रा.भा.का.) एवं संपादक	3
राजभाषा गतिविधियां	4
संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा वाप्कोस के हैदराबाद कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण	6
स्कोप उत्कृष्टता पुरस्कार	10
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस	13
कविता – सफलता और असफलता	15
लेख – 'समय जो गुजर गया, फिर न मिलेगा	16
लेख – स्मार्ट भारत-एक बेहतर कल	19
दो कविताएं – 'वक्त' तथा 'व्यथा..... एक कुर्सी की'	23
लेख–प्रतिभा आर्य (प्रथम नेत्रहीन स्नातक) भारत की प्रथम महिलाएं	24
लेख – घोघा जल संचयन परियोजना, भावनगर, सौराष्ट्र गुजरात के पूर्ण होने के 14 वर्ष पश्चात् उक्त ग्रामीण क्षेत्र में अनुकूल प्रभाव	28
लेख – अनमोल रत्न (हीरा)	33
लेख – विश्वास-सफलता का सन्मार्ग	37
कहानी - मन चंगा तो कठोती में गंगा	40
पुस्तकालय से	44
अपराध से छुटकारा	45
आपके पत्र	46

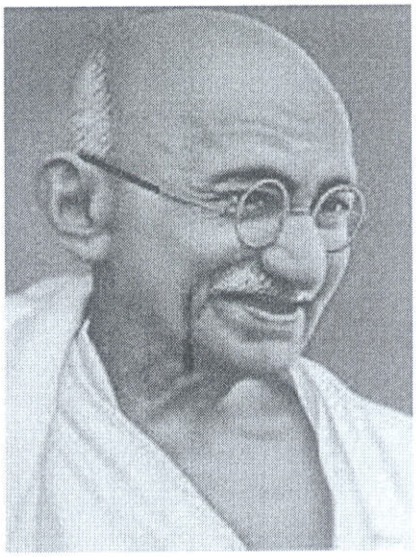

सच्चा जीवन जीने की सुनहरी कुंजी एक ही है। जो सेवा-कार्य सहज रूप से सामने आए, उसमें कूद पड़ना और ध्यानावस्थित हो जाना। फिर मन में भी विचार केवल कार्य को पूर्ण करने का ही रहे, न कि काम उचित है अथवा अनुचित – इसका बात का।

- सम्पूर्ण गांधी वाड्मय (खण्ड 65), पृ0 287

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक की कलम से

यह हर्ष का विषय है कि वाप्कोस की गृह पत्रिका "वाप्कोस दर्पण" का 85वां अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत है। हिन्दी के क्षेत्र में वास्तविक प्रगति प्राप्त करने के लिए यह एक सफल प्रयास है। इस पत्रिका द्वारा राष्ट्रीयता की पहचान व परिभाषा को आधार देने में हम सब उत्साह, निष्ठा व संकल्प सहित प्रत्येक स्तर से अपना-अपना सहयोग दे सकते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि वाप्कोस की गृह पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार संबंधी गतिविधियों के साथ-साथ अन्य पठनीय सामग्री को वाप्कोस के कार्मिकों के बीच पहुंचाने में बड़ी सक्रिय भूमिका निभा रही है।

वाप्कोस जल, विद्युत तथा अवस्थापना विकास के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में विश्व के शीर्षस्थ परामर्शी संगठनों में माना जाता है। यह प्रसन्नता की बात है कि हम अपने तकनीकी दायित्वों के सफल निर्वहन के साथ-साथ राजभाषा के प्रगामी प्रयोग के क्षेत्र में भी उन्नति कर रहे हैं।

मुझे पूरा विश्वास है कि सभी कार्मिक इसी कर्त्तव्य निष्ठा व कड़ी मेहनत से कम्पनी की छवि संवारने में निरन्तर प्रयत्नशील रहेंगे। पत्रिका की प्रगति के लिए समस्त शुभकामनाओं के साथ।

आर. के. गुप्ता

(आर.के.गुप्ता)
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

संबोधन

राजभाषा हिन्दी के प्रति कार्मिकों में जागरूकता एवं उत्साह बनाए रखने में वाप्कोस गृह पत्रिका एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसी क्रम में पत्रिका का 85वां अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत है।

पत्रिका भावों की अभिव्यक्ति का सफल और सकल वाहक है। वाप्कोस का कार्यक्षेत्र तकनीकी है और इस तकनीकी माहौल में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में सार्थक प्रगति हासिल करने की दिशा में कम्पनी निरन्तर प्रयत्नशील है। वाप्कोस में राजभाषा हिन्दी के संवर्धन एवं प्रसार के लिए समय-समय पर आवश्यक कदम उठाए गए हैं।

'वाप्कोस दर्पण' के इस अंक में हमने कम्पनी के कार्यास्वरूप को दर्शाती विभिन्न गतिविधियों के साथ-साथ कुछ उपयोगी विषयों पर अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा लिखे लेख, कविता, कहानी आदि साहित्यिक विद्याओं को पर्याप्त स्थान देने का प्रयास किया है।

मैं आशा करता हूं कि यह पत्रिका प्रत्येक कार्मिक के हृदय में राजभाषा हिन्दी के प्रति समर्पण की भावना को जगाने में सफल होगी। मैं पत्रिका के समस्त लेखकों व सम्पादक मण्डल का अभिनंदन करता हूं।

अनुपम मिश्रा

(अनुपम मिश्रा)
कार्यकारी निदेशक (परि.व मा.सं.वि.)
एवं अध्यक्ष, विराकास

सम्पादकीय

वाप्कोस की गृह पत्रिका का 85वां अंक प्रस्तुत करते हुए मुझे सुखद हर्ष की अनुभूति हो रही है। इसमें कोई संदेह नहीं कि वाप्कोस गृह पत्रिका के नियमित प्रकाशनों के मूल में संगठन के अधिकारियों/कर्मचारियों से सम्पादक मण्डल को प्राप्त लिखित एवं मौखिक व रचनात्मक तथा उत्साहवर्धक प्रतिक्रियाओं से मिली ऊर्जा है। इसका श्रेय उन अधिकारियों/कर्मचारियों को भी जाता है जो नियमित रूप से वाप्कोस गृह पत्रिका में प्रकाशनार्थ सूचनाएं आदि सम्पादक मण्डल को उपलब्ध कराने के रूप में योगदान प्रदान कर रहे हैं। वाप्कोस गृह पत्रिका को प्रकाशित करने के मूल उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए पूर्व अंकों की भांति इस अंक में भी राजभाषा कार्यान्वयन से प्राप्त महत्वपूर्ण सूचनाओं सहित कार्मिकों के लेख/कविताएं आदि शामिल किए गए हैं।

वाप्कोस गृह पत्रिका को सफल सार्थक एवं पूर्ण बनाने के लिए इस अंक के बारे में आपकी टिप्पणी एवं आगामी अंक के लिए आपकी रचनाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

शुभकामनाओं के साथ,

(निम्मी भट्ट)
प्रमुख (रा.भा.का.)

राजभाषा गतिविधियां

- सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की अध्यक्षता में दिनांक 12.06.2017 को सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के प्रमुखों/कार्यकारी निदेशकों के साथ आयोजित बैठक में वाप्कोस से श्री आर.के.गुप्ता, अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक तथा श्री अनुपम मिश्रा, कार्यकारी निदेशक (परि.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति, प्रमुख (रा.भा.का.) श्रीमती निम्मी भट्ट तथा श्री डी.के.सेठी, उप प्रबन्धक (रा.भा.) ने भाग लिया।

- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.), गुड़गांव के सदस्य कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों की बैठक दिनांक 14.06.2017 को श्री अनुपम मिश्रा, कार्यकारी निदेशक (परि.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

- वाप्कोस में दिनांक 16.06.2017 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय से श्री राजेश श्रीवास्तव, सहायक निदेशक को आमंत्रित किया गया था जिन्होंने यूनीकोड के माध्यम से कम्प्यूटर पर हिन्दी का प्रयोग करने के बारे में कार्यशाला में उपस्थित कार्मिकों को जानकारी दी। इस कार्यशाला में 19 कार्मिकों ने भाग लिया।

- राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी स्थिति का जायजा लेने हेतु श्री डी.के.सेठी, उप प्रबन्धक, (रा.भा.) द्वारा दिनांक 20.06.2017 को वाप्कोस के गुड़गांव स्थित पुस्तकालय का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

- जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय की दिनांक 27.06.2017 को संयुक्त सचिव (पीपी) एवं राजभाषा प्रभारी की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में वाप्कोस से श्रीमती निम्मी भट्ट, प्रमुख (रा.भा.का.) ने भाग लिया।

- दिनांक 30.06.2017 को श्री अनुपम मिश्रा, कार्यकारी निदेशक (परि.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास की अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।

- दिनांक 03.05.2017 को जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय से श्रीमती वीना सत्यवादी, सहायक निदेशक (रा.भा.) एवं अन्य अधिकारियों द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की स्थिति का जायजा लेने हेतु वाप्कोस के गुड़गांव कार्यालय का निरीक्षण किया गया।

- भारतीय भाषा एवं संस्कृति केन्द्र द्वारा दिनांक 25 से 27 मई 2017 तक मुन्नार, केरल में आयोजित किये गए 31वें अखिल राजभाषा प्रशिक्षण शिविर एवं सम्मेलन में वाप्कोस लिमिटेड से श्रीमती निम्मी भट्ट, प्रमुख (रा.भा.का.) ने भाग लिया।

(डी.के.सेठी)
उप प्रबंधक (रा.भा.का.)

*****

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा वाप्कोस के हैदराबाद कार्यालय का राजभाषाई निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति लोकसभा के बीस एवं राज्यसभा के दस सदस्यों को मिलाकर गठित की जाती है। इस समिति को सुविधा की दृष्टि से तीन उप-समितियों में बांटा गया है। हमारा उपक्रम दूसरी उप समिति के अन्तर्गत आता है।

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 25.4.2017 को वाप्कोस के क्षेत्रीय कार्यालय हैदराबाद का राजभाषाई निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान समिति का नेतृत्व माननीय डा० प्रसन्न कुमार पाटसाणी, संयोजक महोदय द्वारा किया गया। सर्वप्रथम हैदराबाद कार्यालय के डा० एस.वी.एन.राव, परियोजना निदेशक तथा मुख्यालय से उपस्थित श्री अनुपम मिश्रा, कार्यकारी निदेशक (परि.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा माननीय संसदीय राजभाषा समिति के सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया गया।

माननीय सांसदों के अभिनंदन एवं परिचय की औपचारिकता के उपरांत डा० एस.वी.एन.राव ने वाप्कोस, हैदराबाद कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी स्थिति का विवरण उप समिति के सम्मुख प्रस्तुत किया। इस पर समिति के सभी माननीय सदस्यों ने हैदराबाद कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के सभी पहलुओं पर विस्तार से विचार-विमर्श किया।

इस निरीक्षण कार्यक्रम में वाप्कोस तथा जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय से निम्नलिखित अधिकारी उपस्थित थे:-

<u>**हैदराबाद कार्यालय**</u>

1. डा० एस.वी.एन. राव, परियोजना निदेशक
2. श्रीमती डी.वी.एस.आर.एल. रेखा, अपर मुख्य अभियन्ता

मुख्यालय

1. श्री अनुपम मिश्रा, कार्यकारी निदेशक (परि.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास
2. श्रीमती निम्मी भट्ट, प्रमुख (रा.भा.का.)
3. श्री डी.के.सेठी, उप प्रबन्धक (रा.भा.)
4. श्रीमती गीता शर्मा, सहायक प्रबन्धक (हिन्दी)

मंत्रालय

1. श्री के.एम.एम. अलिमालिमगोति, आर्थिक सलाहकार एवं राजभाषा प्रभारी
2. श्री एम.सी.भारद्वाज, उप निदेशक (रा.भा.)

वाप्कोस द्वारा प्रस्तुत की गई निरीक्षण प्रश्नावली के आधार पर समिति सदस्यों द्वारा हैदराबाद कार्यालय में हिन्दी में किये जा रहे कार्यों की सराहना की गई और हिन्दी पत्राचार के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के निर्देश दिये।

अंत में डा० एस.वी.एन.राव, पारियोजना निदेशक ने उप समिति के सभी माननीय सदस्यों का राजभाषा के उत्तरोत्तर विकास हेतु सार्थक विचार-विमर्श के लिए धन्यवाद किया एवं दिये गए दिशानिर्देशों के सम्यक् अनुपालन का आश्वासन दिया।

(डी.के.सेठी)
उप प्रबन्धक (रा.भा.)

******

स्कोप उत्कृष्टता पुरस्कार

वाप्कोस को 'सार्वजनिक क्षेत्र प्रबंधन में उत्कृष्ट व श्रेष्ठ योगदान हेतु – इन्स्टीट्यूशनल कैटेगरी स्कोप पुरस्कार' प्रदान किया ।

श्री प्रणब मुखर्जी, भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा श्री अनंत जी.गीते, माननीय भारी उद्योग व लोक उद्यम केन्द्रीय मंत्री तथा श्री बाबुल सुप्रियो, माननीय भारत उद्योग व लोक उद्यम राज्य मंत्री, भारत सरकार की उपस्थिति में विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित समारोह में श्री आर.के.गुप्ता, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस लिमिटेड को 'सार्वजनिक क्षेत्र प्रबंधन में उत्कृष्ट व श्रेष्ठ योगदान – इन्स्टीट्यूशनल कैटेगरी हेतु स्कोप विशेष सराहनीय पुरस्कार' प्रदान किया गया।

वाप्कोस को 'स्कोप सराहनीय पुरस्कार – कार्पोरेट गवर्नेंस' प्रदान किया गया

श्री प्रणब मुखर्जी, भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा श्री अनंत जी.गीते, माननीय भारी उद्योग व लोक उद्यम केन्द्रीय मंत्री तथा श्री बाबुल सुप्रियो, माननीय भारत उद्योग व लोक उद्यम राज्य मंत्री, भारत सरकार की उपस्थिति में विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित समारोह में श्री आर.के.गुप्ता, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस लिमिटेड को 'स्कोप सराहनीय पुरस्कार' की स्वर्ण ट्राफी व प्रशंसा पत्र प्रदान किया गया।

वाप्कोस को 'सार्वजनिक क्षेत्र प्रबंधन में उत्कृष्ट व श्रेष्ठ योगदान हेतु – पीएसईएस में श्रेष्ठ महिला प्रबंधक स्कोप पुरस्कार'

श्री प्रणब मुखर्जी, भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा श्री अनंत जी.गीते, माननीय भारी उद्योग व लोक उद्यम केन्द्रीय मंत्री तथा श्री बाबुल सुप्रियो, माननीय भारत उद्योग व लोक उद्यम राज्य मंत्री, भारत सरकार की उपस्थिति में विज्ञान भवन, नई दिल्ली में आयोजित

समारोह में सुश्री पूजा कपूर, प्रमुख (व्यवसाय विकास), वाप्कोस को 'सार्वजनिक क्षेत्र प्रबंधन में उत्कृष्ट व श्रेष्ठ योगदान हेतु – पीएसईएस में श्रेष्ठ महिला प्रबंधक स्कोप पुरस्कार' प्रदान किया गया।

*****

जब तक तुम दौड़ने
का साहस नहीं
जुटाओगे, तब तक
प्रतिस्पर्धा में जीतना
तुम्हारे लिए असंभव
बना रहेगा।

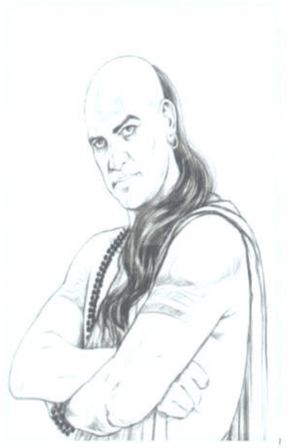

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

डी.के.सेठी
उप प्रबन्धक (रा.भा.का.)

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को मनाया जाता है। यह दिन वर्ष का सबसे लम्बा दिन होता है और योग भी मनुष्य को लम्बी आयु प्रदान करता है। प्रथम बार यह दिवस 21 जून 2015 को मनाया गया था जिसकी पहल भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 27 सितम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने भाषण से की थी जिसमें उन्होंने कहा:

"योग भारत की प्राचीन परंपरा का एक अमूल्य उपहार है। यह दिमाग और शरीर की एकता का प्रतीक है, मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य है। यह विचार, संयम और पूर्ति प्रदान करता है। हमारी बदलती जीवन-शैली में यह चेतना बनकर हमें जलवायु परिवर्तन से निपटने में हमारी मदद करता है। आईये एक अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को अंगीकृत करने की दिशा में कार्य करें।"

11 दिसम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र में 193 सदस्यों द्वारा 21 जून को **"अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस"** को मनाने के प्रस्ताव को स्वीकृति मिली। तीसरा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पूरे विश्व के लोगों के द्वारा 21 जून 2017 को मनाया गया। योग की उत्पत्ति प्राचीन समय में भारत में हुई थी जब लोग अपने शरीर और दिमाग में बदलाव लाने के लिए ध्यान किया करते थे। योग सभी के लिए बहुत आवश्यक है जिसे रोजाना सुबह के समय खाली पेट किया जाए तो यह बहुत फायदेमंद है।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के उद्धेश्य

- योग के अद्भुत और प्राकृतिक फायदों के बारे में लोगों को जानकारी देना।
- योग के सभी फायदों की ओर पूरे विश्वभर में लोगों का ध्यान खींचना।
- लोगों को शारीरिक और मानसिक बीमारियों के प्रति जागरुक बनाना और योग के माध्यम से इसका समाधान उपलब्ध कराना।
- योग अभ्यास के द्वारा लोगों को प्रकृति से जोड़ना।
- योग के द्वारा ध्यान की आदत को लोगों में बनाना।

- व्यस्त दिनचर्या से स्वास्थ्य के लिये एक दिन निकाल कर समुदायों को और करीब लाना।
- योग के द्वारा तनाव से राहत दिलाने में लोगों की मदद करना।

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय के तत्वावधान में वाप्कोस लिमिटेड के लगभग 100 कार्मिकों द्वारा दिनांक 21.6.2017 बुधवार को प्रातः 7.00 बजे से 8.00 बजे तक इंडिया गेट पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम में बड़े उत्साहपूर्वक भाग लिया । योग दिवस से ठीक पहले रात्रि से ही वर्षा हो रही थी और सुबह भी वर्षा जारी थी। वर्षा को देखते हुए ऐसा प्रतीत हो रहा था कि क्या आज योग कार्यक्रम हो पाएगा। ऐसा सोचते-सोचते हम लोग अपने-अपने घरों से निकलकर किसी तरह इंडिया गेट पहुंचे। भगवान की कृपा से वर्षा रूक चुकी थी और हमारा योग कार्यक्रम ठीक 7.00 बजे प्रारम्भ होकर पूरे एक घन्टे तक योग टीचर के मार्गदर्शन में चला। वर्षा होने के कारण मौसम काफी सुहावना और खुशनुमा हो गया था जिसका पूरा लाभ सभी कार्मिकों ने उत्साहपूर्वक उठाया और बड़ी लगन के साथ व्यायाम किये। मौसम सुहावना होने की वजह से पता ही नहीं चला कि कब एक घन्टा व्यतीत हो गया। योग के बाद हमने अपने मन में संकल्प लिया कि हम अपने स्वास्थ्य को ठीक रखने के लिए हर रोज थोड़ा योग अवश्य करेंगे, आप भी कीजिए।

******

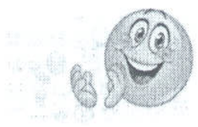

एक बच्चा खो गया तो किसी शुभ चिंतक ने उसका फोटो वॉट्स एप ग्रुप में डाला और लिख दिया ।

बच्चे को उसके मां बाप से मिलाने के लिए इस फोटो को ज्यादा से ज्यादा फॉर्वर्ड करें।

बच्चा शाम को घर वापस आ गया।

लेकिन लोग पिछले एक साल से अभी भी फोटो को शेयर कर रहे हैं।

अब बच्चा जब भी किसी काम से कहीं बाहर जाता है तो लोग उसे पकड़कर उसके घर पहुंचा देते हैं।

******

सफलता और असफलता

कासीराजू श्रीनिवास
डा.ए.आ., हैदराबाद कार्यालय

कोई भी हमेशा सफल नहीं होता
न कोई आजीवन असफल ही रहता है।

सफलता विलम्बित असफलता है
और असफलता विलम्बित सफलता है।
न असफलता अंतिम होती है
और न सफलता स्थाई होती है।
आज की सफलता और आज की विफलता
जीवन की लंबी यात्रा में एक के बाद एक
उठाया जाने वाला कदम है

जीवन एक खेल है
और यदि आप यह खेल खेलते रहे
तो जीत आपकी ही होगी।
रास्ते को बीच में छोडकर न जाएं
अंत तक चले, चलते रहें
आखिरकार आप 'समापन रेखा'
जरूर पार कर जाएंगे।

******

जिन्दगी में हर फिजा के रंग भरना सीख लो,
हर जरूरतमंद के दुःख दर्द हरना सीख लो,
जिन्दगी तो नाम है जिन्दादिली का दोस्तों,
हार को भी जीत में तब्दील करना सीख लो।

समय जो गुजर गया, फिर न मिलेगा

साभार: समय पर कार्य सफलता का सोपान
लेखक : देवेन्द्र कुमार

अर्थात् – जो मनुष्य वकत का सदुपयोग करता है, एक क्षण भी बरबाद नहीं करता, वह बड़ा सौभाग्यवान होता है। धन और रूपये-पैसे के मामले में यह कहा जाता है कि जिसका खर्च व्यवस्थित और मितव्ययी होता है वही जीवनपर्यंत जन-धन का सुखलाभ प्राप्त करता है, उसके खजाने में किसी प्रकार की कमी नहीं आती। ऐसे ही समय के प्रत्येक क्षण का उपयोग कर लेना भी मनुष्य की बुद्धिमत्ता का प्रतीक है। उन्नति की इच्छा रखने वालों को अपना समय कभी व्यर्थ नहीं गवांना चाहिए। समय का सुदपयोग करने में सदैव सावधान रहना चाहिए। आज जो समय गुजर गया, कल वह फिर से आने वाला नहीं।

कार्य चाहे व्यवहारिक हो या पारमार्थिक, जो समय संबंधी विवेक और सावधानी नहीं रखते,उन्हें इसके दुष्परिणाम जन्म-जन्मांतरों तक भुगतने पड़ते हैं। आज अपने पास सभी परिस्थितियां हैं, साधन हैं, मनुष्य शरीर मिला है, बुद्धि और विचार की बहुमूल्य विरासत जो हमें मिली है, वह यह समझने के लिए हैं कि आपका समय सीमाओं से प्रतिबंधित है। सृष्टि के दूसरे जीवों में से कई तो लम्बी आयु वाले भी होते हैं, किन्तु मनुष्य की अवस्था अधिक से अधिक सौ वर्ष है। उसमें भी कितना समय अवस्था के अनुरूप व्यर्थ चला जाता है। फिर जो समय शेष बचता है, उसका उपयोग यदि सांसारिक और आध्यात्मिक विकास के लिए नहीं कर पाए तो कौन जाने यह परिस्थितियां फिर कभी मिलेंगी या नहीं।

आध्यात्मिक जीवन व्यतीत करने वाले भी जब समय का ठीक-ठाक उपयोग नहीं कर पाते, इस संबंध में जागरूक और विवेकशील नहीं होते तो बड़ा आश्चर्य होता है। इससे अच्छे तो वे लोग ही हैं जो बेचारे किसी प्रकार जीवन-निर्वाह के साधन और आजीविका जुटाने में ही लगे रहते हैं। उन्हें यह पछतावा तो नहीं होता कि जीवन के बहुमूल्य क्षणों का पूर्ण उपयोग नहीं कर सके। आजीविका भी अध्यात्म का एक अंग है, अतएव सम्पूर्ण न सही, कुछ अंशों में तो उन्होंने मानव-जीवन का सदुपयोग किया। हाथ पर हाथ रखकर आलस्य में समय गंवाने वाले सामाजिक जीवन में गडबड़ी ही फैलाते हैं, भले ही वे कितने ही बुद्धिमान, भजनोपदेशक, कथावाचक, पंडित या संत-सन्यासी ही क्यों न हों।

समय का सदुपयोग करने वाला घसियारा बेकार बैठे रहने वाले पंडित से बढ़कर है, क्योंकि वह समाज को किसी न किसी रूप में समुन्नत बनाने का प्रयास करता ही है।

आलस में समय गंवाने वाले कुसंग और कुबुद्धि के द्वारा उल्टे रास्ते तैयार करते हैं। कहते हैं खाली दिमाग शैतान का घर। जब कुछ काम नहीं होता तो खुराफात ही सूझती है। जिन्हें किसी सत्कार्य-स्वाध्याय में रूचि नहीं होती, खाली समय में कुसंगति, दुर्व्यसन, ताश-तमाशे और तरह-तरह की बुराईयों में ही अपना समय बिताते हैं। समाज में अव्यवस्था का कारण कोई बाहरी शक्ति नहीं होती, अधिकांश बुराईयां कलह और झंझट बढ़ाने का श्रेय उन्हीं को है जो व्यर्थ में समय गवांते रहते हैं। मनुष्य लंबे समय तक निष्प्रयोजन, खाली बैठा नहीं रह सकता, अतएव यदि वह भले काम नहीं करता तो बुराई करने में उसे देर न लगेगी। उसे अच्छा या बुरा, सच्चा या चाहे काल्पनिक, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष कुछ न कुछ करना ही पड़ेगा। इसलिए यदि उसे सही विषय न मिले तो वह बुराईयां ही ग्रहण करता है और उन्हें ही समाज में बिखेरता हुआ चला जाता है।

मनुष्य के अंत:करण में ही उनका देवत्व और असुरत्व विद्यमान है। जब तक हमारा देवता जागृत रहता है और हम विभिन्न कल्याणकारी कार्यों में संलग्न रहते हैं, तब तक आंतरिक असुरता भी दबी पड़ी रहती है, पर यह प्रसुप्त वासनाएं भी अवकाश के लिए चुपचाप अंतर्मन में जगती रहती हैं, समय पाते ही देवत्व पर प्रहार कर बैठती हैं।

जब यह दिखाई दे कि अब अपने पास कोई काम शेष नहीं रहा तो मनुष्य अपने निवास के आसपास की सफाई, वस्त्रों की हिफाजत, घर की मरम्मत, खेतों की देखरेख, लेखन-ज्ञान, विषयक चर्चा या किसी जीवनोपयोगी साहित्य का स्वाध्याय ही करने लग जाए, इससे टूटी-फूटी वस्तुओं की साज-संभाल, स्वास्थ्य रक्षा और ज्ञान वृद्धि तो होगी ही। समय का मूल्यांकन केवल रूपये-पैसे से ही नहीं हो सकता। जीवन में और भी अनेकों पारमार्थिक व्यवसाय हैं, उन्हें भी देखना और ज्ञान प्राप्त करना हमारा धर्म होना चाहिए, सत्कार्यों में लगाए गए समय का परिणाम सदैव सुखदायक ही होता है।

लगातार काम न करने का, किसी व्यवसाय में अभिरूचि न होने का कारण यह है कि एक-सी स्थिति में रहते हुए मनुष्य को उकताहट पैदा होती है, स्वाभाविक भी है। मनोरंजन की आवश्यकता सभी को होती है। संत-म्हात्मा भी प्रकृति-दर्शन और तीर्थयात्रा आदि के रूप में मनोरंजन प्राप्त किया करते हैं। यह उकताहट यदि सम्भाली जाए तो किसी व्यसन के रूप में ही फूटती है, व्यसन की शुरूआत खाली समय में कुसंगति के कारण ही होती है।

आजकल इस प्रकार के साधनों में किसी प्रकार की कमी नहीं है। निरूत्साह, मानसिक थकावट दूर करने के लिए विविध मनोरंजन के साधन आज बहुत हो गए हैं किन्तु समय के सदुपयोग और जीवन की सार्थकता की दृष्टि से इनमे से उपयोगी बहुत कम ही दिखाई देते हैं। अधिकांश तो धन साध्य और मनुष्य का नैतिक पत्तन करने वाले ही हैं। इसलिए यह भी आवश्यक हो गया है कि जब कुछ समय श्रम से उत्पन्न थकावट को दूर करने के लिए निकालें तो यह भलीभांति विचार कर लें कि यह जो समय उक्त कार्य में लगाने जा रहे हैं, उसका आध्यात्मिक उत्थान और आत्मविश्वास के लिए क्या सदुपयोग हो रहा है। मनोरंजन केवल प्रसुप्त वासना की पूर्ति के लिए न हो वरन उसमें भी आत्मकल्याण की भावना सन्निहित बनी रहे तो उस समय का उपयोग सार्थक माना जा सकता है।

फुरसत और खाली समय का उपयोग अच्छे-बुरे किसी भी काम में हो सकता है। नई-नई विद्या, कला, लेखन शास्त्रार्थ के द्वारा नई सूझ और आध्यात्मिक बुद्धि जागृत होती है। इससे अपना व समाज दोनों का ही कल्याण होता है। सत्कर्म में लगाए हुए समय से मनुष्य का, जीवन सुखी, समुन्नत तथा उदात्त बनता है। जापान की उन्नति का प्रमुख कारण फुरसत के समय का सदुपयोग है, वहां सरकारी काम के घंटों के बाद का समय लोग कुटीर उद्योगों में लगाते हैं। छोटे-मोटे खिलौने-घडियां आदि बनाते हैं, इससे वहां की राष्ट्रीय सम्पत्ति बढ़ी, लोगों का जीवन सुखी हुआ और नैतिक सदाचार का प्रसार हुआ है। खाली समय का उपयोग जिस प्रकार के कार्यों में करेंगे वैसी ही उन्नति अवश्य होगी।

******

आसक्ति

एक बार भगवान बुद्ध जल में आधे डूबे हुए एक खंडहर हो गए महल के पास रूके तथा मुस्कुराए। उनके शिष्यों के द्वारा कारण पूछने पर उन्होंने व्यक्त किया कि एक समय इस महल के राजपरिवार के लोग आपस में राजनीति, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि किया करते थे कि किस प्रकार से इस राजमहल पर अपना अधिकार जमा कर राज करें। अब वे ही यहां पुनर्जन्म लेकर जल में मेंढक बन कर टर्र-टर्र कर रहे हैं।

******

स्मार्ट भारत - एक बेहतर कल

कौस्तुभ तिवारी, अभियंता
भोपाल कार्यालय

विश्व की जनसंख्या एक स्थिर गति से बढ़ती जा रही हैं। अधिक से अधिक नागरिक शहरों की तरफ बढ़ते जा रहे हैं। एक बेहतर जीवन शैली, आजीविका के लिए ग्रामीण क्षेत्रों से 25-30 लोग हर मिनट शहरों की तरफ कदम बड़ा रहें हैं। विषेशज्ञों का कहना है दुनिया की शहरी आबादी 2050 तक दोगुनी हो जाएगी। शहरी क्षेत्रों में भी सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) का उच्च हिस्से का योगदान है। भारत अगले 15 वर्षो में राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) का लगभग 75% योगदान देगा ऐसा अनुमान किया गया है। सरकार शहरों/ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास और सामाजिक समृद्धि के लिए प्रमुख योगदान कर रही है। रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए और बुनियादी ढांचा मजबूत करने के लिए, शहरों का विकास एकमात्र केन्द्र है। भारत को नई दिशा देने के लिए सरकार द्वारा प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में स्मार्ट इंडिया, डिजीटल इंडिया और आदर्श ग्राम योजना का कन्सेप्ट लाया गया।

स्मार्ट सिटी क्या है?

पिछले कुछ महीनों में, शब्द 'स्मार्ट सिटी' बड़े पैमाने पर भारतीय समाचार पत्रों, इंटरनेट और मीडिया में छाया हुआ है। सरकार ने सत्ता में एक वर्ष पूरा कर लिया है, नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में "100 स्मार्ट शहरों" के देश भर मे बनाने का वादा किया गया है। इस परियोजना का उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों को शहरीकरण का लाभ देना है। स्मार्ट सिटी के अंतर्गत शहरों को नई आकृति प्रदान करने और इसको अधिक रहने योग्य बनाना है। संक्षेप में, एक स्मार्ट सिटी किफायती और पर्यावरण के अनुकूल मायनों में नागरिकों के जीवन स्तर को बढ़ाने के लिए डिजिटल प्रौद्योगिकी समाधान का उपयोग करने के लिए बनाया जा रहा है।

रिसर्च द्वारा एक अध्ययन के अनुसार दुनिया के शीर्ष 5 स्मार्ट शहर बार्सिलोना, न्यूयार्क, लदंन, नाएस और सिंगापुर है।

बार्सिलोना	-	स्मार्ट पार्किंग
न्यूयार्क	-	स्मार्ट स्ट्रीट लाइटिंग, स्मार्ट यातायात
लंदन	-	प्रौद्योगिकी, ओपन डाटा में ट्रिक्स

भारत की पहली स्मार्ट सिटी:-

गुजरात भारत का उगता हुआ सूरज है जो सब देशों में अपनी अलग पहचान बना रहा है। भारत की पहली स्मार्ट गिफट् सिटी (गुजरात इंटरनेशनल फाईनेंस टेक सिटी) आने वाले दिनों में भारत के कोने-कोने में छाने वाली है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के तत्वावधान में केन्द्र सरकार ने भारत में 100 + स्मार्ट शहर बनाने की एक महत्वाकांक्षी योजना की शुरूआत की है। भारत को बदलने के लिए यह तर्क ज्यादा मुशकिल भी नहीं है जिसकी जनसंख्या आज 1.2 अरब है। गुजरात इंटरनेशनल फाईनेंस टेक सिटी (गि.फ.ट.) गुजरात राज्य में व्यापार का केन्द्रीय जिला है। यह सिटी 886 एकड़ पर बनायी जा रही है। इसका मुख्य उद्देश्य वित्त और तकनीक कंपनियों आदि को मुंबई, बंगलौर, गुड़गाँव से वहाँ अपने अभियान को स्थानांतरित करना है ताकि एक अच्छा और उच्च कोटि का भौतिक बुनियादी ढाँचा जैसे कि बिजली, पानी, गैस, सड़कें, टेलीकाम और ब्रॉडबैंड प्रदान किया जा सके। यहाँ एक विशेष आर्थिक क्षेत्र (एस.ई.जेड.) जिसमें अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र, होटल, कन्वेंशन सेंटर, अंतर्राष्ट्रीय तकनीकी पार्क, भारतीय सॉफ्टवेयर प्रौद्योगिकी पार्क (एस.टी.पी.आई.) इकाइयों, शॉपिंग मॉल, स्टॉक एक्सचेंज बनाना, यह सब निश्चित किया गया है।

गुजरात सरकार ने एक संयुक्त उद्यम कंपनी गुजरात इंटरनेशनल फाईनेंस कंपनी लिमिटेड की स्थापना की है जोकि गुजरात के शहरी विकास कंपनी लिमिटेड (जि.यु.डी.सी.औ.एल.) अथवा इन्फ्रास्ट्रक्चर लीजिंग एंड फाइनेशियल संर्विसेज के साथ काम कर रही है। सरकार शहरीकरण और इसकी बढ़ती संख्या पर बड़ा दाव लगा रही है इस पूरी परियोजना पर 7000 करोड़ अमरीकी डालर व्यय का अनुमान लगाया गया है। केन्द्रीय व्यापार जिला द्वारा गी.फ.ट् सिटी परियोजना के विकास को निम्नलिखित रूप में तीन प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है:-

1. कार्यालय :- इसमें सम्मेलन और प्रदर्शनी के रूप मे पद और संबद्ध सुविधा भी शामिल हैं।
2. सेवा :- रेस्टोरेंट, मनोरंजन और सांस्कृतिक सुविधा, होटल आदि शामिल हैं।
3. आवासीय सुविधाएं :- अपार्टमेंट, आवासीय भवनों आदि का निर्माण शामिल हैं।

निर्मित क्षेत्र	क्षेत्र (लाख वर्गमीटर)
वाणिज्यिक	3.90 (42 करोड़ वर्गफुट)
आवासीय	1.30 (14 करोड़ वर्गफुट)
सामाजिक सुविधाएं	0.56 (6 करोड़ वर्गफुट)

गि.फ.ट. सिटी की उपयोगिताएँ:-

1. बढ़ी सार्वजनिक परिवहनः- हर साल, लोगों को जाम में सड़कों पर कई घंटे खर्च होते है। यह कम करने के लिए संकल्प मेट्रो की तरह कुशल सार्वजनिक परिवहन प्रणाली के माध्यम से किया जाएगा। इंट्रा - सिटी ट्रांसपोर्ट (एम.आर.टी.सी.एस.एल.आर.टी.एस.) की सुविधा दी जायेगी। यहाँ पर स्वयं के मेट्रो स्टेशन भी बनाए जाएगें।

2. बिजली:- 1000 मेगावाट विद्युत आपूर्ति 99.99 विश्वनीय (प्रति आउटेज 5.3 मिनट) करने की योजना है। गि.फ.ट. सिटी पावर ग्रिड स्विट्जरलैंड के (ए.बी.बी.) समूह द्वारा तैयार किया जाएगा जिसमें बिजली की सभी तारें भूमिगत होंगी।

3. गैस पाइप लाईन:- गैस पाइप लाईन प्राकृतिक गैस सिलेंडरों की तुलना में सस्ता और सुरक्षित है, जो कि पाइप लाईन के माध्यम से हर घर और इमारत को वितरित किया जाएगा। शहर में गैस की आपूर्ति जी.एस.पी.एल., गैस संचरण पाइप लाइनों मौजूदा गैस नेटवर्क से बनाया जाएगा।

4. एयर कंडीशनिंग:- गि.फ.ट. सिटी में केन्द्रीकृत एयर कंडीशनिंग की जाएगी जोकि सस्ती और कम बिजली का उपयोग करेगा।

5. ठोस अपशिष्ट प्रबंधन (सॉलीड वेस्ट मैनेजमेंट) सभी बेकार पदार्थ को स्वचालित रूप से 90 कि.मी./घंटा (56 मील प्रति घंटे) के उच्च गति से भूमिगत पाइप के माध्यम से मशीनों द्वारा चूसा जाएगा और प्लाज्मा गैसीकरण के माध्यम से इलाज किया जाएगा।

6. ग्रीन बिल्डिंग- इमारतों में वातानुकूलन और प्रकाश के माध्यम से उत्सर्जन करना महत्वपूर्ण है। नए भवनों का निर्माण मानदंडो के आधार पर किया जाएगा।

7. सरोवर एवं वाटरफ्रंट विकास:-
    1. 1 कि.मी. लंबाई और 7 मीटर गहराई
    2. चौड़ाई में 52 मीटर-160 मीटर
    3. 15 दिनों के लिए पीने के पानी के भंडारण उपयुक्त

गि.फ.ट. सिटी का निर्माण:-

1. प्रथम चरण:- दो 29 मंजिलों की व्यावसायिक टावर, जिसे गि.फ.ट.-I और गि.फ.ट.-II कहा जाता है, इस चरण मे आधारभूत संरचना के निर्माण शामिल होंगे।

2. द्वितीय चरण:- दूसरे चरण में इमारतों और सेवाओं के आगे निर्माण भी शामिल हैं।

3. तीसरे चरण:- 2016 - 2020 में पूरी तरह से शहर का निर्माण और प्रारंभ के लिए तीसरे चरण की योजना बनाई गई है।

4. चौथे चरण:- चौथे चरण में वाणिज्य और श्रम का अनुभव करने के लिए योजना बनाई गयी है।

सारांश :-

पाँच प्रकार के टॉवरों का निर्माण शामिल है जिसका नाम गि.फ.ट. डायमंड टॉवर, गि.फ.ट. गेटवे टॉवर गि.फ.ट. क्रिस्टल टॉवर, गि.फ.ट. कन्वेंशन सेंटर और वर्ल्ड ट्रेड सेंटर, गि.फ.ट. सिटी भी शामिल है। गि.फ.ट. सिटी के पूरी तरह से विकसित होने से शहर में 5 लाख प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर की एक समान संख्या उत्पन्न होने की उम्मीद है। जोकि भारत की सबसे बड़ी रोजगार योजना होगी।

यह कहना उचित होगा कि गिफट सिटी एवं स्मार्ट सिटी जैसे विकास देश की आर्थिक एवं सामाजिक प्रगति के लिए बहुत जरूरी है। यही नहीं तुलनात्मक अध्ययन से यह पाया गया है कि स्मार्ट रोड़, स्मार्ट भवन, ग्रीन भवन, स्मार्ट कोरिडोर आदि जनमानस की रोजमर्रा की कार्यगति में तेजी लाती है एवं उनके रहन-सहन को उन्नत बनाती हैं। इनका निर्माण भारतवर्ष के लिये नितांत आवश्यक है।

****

कविता

ए.साईंसुमा किशोर

अभियंता, हैदराबाद कार्यालय

घुटनों पर रेंगते-रेंगते
कब पैरों पर खड़ा हुआ।
तेरी ममता की छांव में,
न जाने कब मैं बड़ा हुआ।

काला टीका, दूध मलाई,
आज भी सब कुछ वैसा है।
मैं ही मैं हूं दूर जगह
प्यार ये तेरा कैसा है?

सीधा-साधा भोला-भाला,
मैं ही सबसे अच्छा हूं।
कितना भी हो जाऊं बड़ा,
मां, मैं आज भी तेरा बच्चा हूं।

****

कविताएं

वक्त

कुमारी विशाखा घई
सुपुत्री श्रीमती आशा घई, पी.आर.ओ.

इतिहास खुद को दोहराता है,
वक्त सबको झुकना सिखाता है।

घमंड करने वाले का अंत जल्दी आता है,
वक्त यह कहानी बखूबी से बतलाता है।

हर अच्छा-बुरा दिन यह सिखलाता है,
जिन्दगी का गणित यही समझाता है।

काया-पलट कर यह फिर बदल जाता है,
कई सुन्दर कहानियां भी यही सुनाता है।

गिरगिट की भांति रंग बदल जाता है,
जीने का मतलब बताता है।

पल-भर में ही दुनिया दिखलाता है,
मुखोटों के पीछे की सच्चाई से अवगत कराता है।

कभी मोल-भाव कराता है,
कभी मिसाल बन जाता है वक्त।

यदि न समझो तो चुटकी में ही,
बीत जाता है वक्त।

*****

व्यथा..... एक कुर्सी की

श्रीमती संगीता झा
उप प्रबंधक (का.व प्रशा.)

मैं कुर्सी हूं।
हां, मैं वही कुर्सी हूं,
जिस पर बैठने के लिए,
जिसे पाने के लिए,
तुम... सब लड़ते-झगड़ते थे,
तो.... आज
आज मैं.. इतनी उपेक्षित क्यों हो गई हूं?
कि.. मुझ पर बैठना तो दूर,
तुम मुझे देखना भी नहीं चाहते,
क्योंकि...........
क्योंकि समय के साथ-साथ,
मैं... जर्जर, लाचार, कमजोर जो हो गई हूं,
जगह-जगह से मेरा रंग फीका जो पड़ गया है,
अब तो तुम... अपना सारा समय,
उस नई चमचमाती कुर्सी के साथ ही बिताते हो,
तुम्हारा प्यार, तुम्हारी महत्वाकांक्षाएं,
सब कुछ.....
उस नई कुर्सी के साथ ही है,
हालांकि मैं जानती हूं मेरे दोस्त,
कि एक दिन
जब वो भी पुरानी, बदरंग और कमजोर हो जाएगी,
तो तुम
फिर एक नई चमचमाती कुर्सी के साथ होंगे।

*****

प्रतिभा आर्य

प्रथम नेत्रहीन स्नातक

साभार : भारत की प्रथम महिलाएं

अमेरिका की नेत्रहीन विदुषी हेलेन केलर का नाम सभी जानते हैं। वे एक सम्पन्न परिवार में पलीं, इसलिए पर्याप्त साधनों के साथ-साथ अनथक श्रम और साधना के बल पर उन्हें जीवन में आगे बढ़ने का अवसर मिला। परन्तु बिना विशेष साधन या सहायता के केवल लगन द्वारा संघर्षरत रहकर जिस भारतीय नारी ने विद्योपार्जन की दिशा में 'पहला' कदम उठाया, उनके बारे में लोगों की जानकारी प्राय: नगण्य है।

आज भारत में 100 से ज्यादा नेत्रहीन महिलाएं ग्रेजुएट हैं। कुछ एम.ए., पी.एच.डी. तक हैं, कुछ अध्यापन-कला में प्रशिक्षित भी। किन्तु हमारे देश में सुविधाओं के अभाव में भी उच्च शिक्षा में पहल करने वाली नेत्रहीन महिला की मुझे खोज थी। 'रोशनी' के सितम्बर 1949 के अंक में 'ये अंधी लड़कियां' शीर्षक से एक लेख छपा था। उसमें किसी लड़की के ग्रेजुएट होने का जिक्र तो नहीं था, पर प्रतिभा बागची नाम की लड़की का चित्र उसमें इसलिए प्रकाशित किया गया था कि तब वह कॉलेज में पढ़ती थी। लेकिन कालेज में शिक्षा प्राप्त करने वाली वह पहली नेत्रहीन लड़की थी, इसका निश्चय नहीं हो सका था। देहरादून के ब्रेल-संपादक को पत्र लिखकर पूछा तो उन्होंने पुष्टि की कि प्रतिभा बागची ही 'पहली नेत्रहीन ग्रेजुएट लड़की' थीं, जो अब विवाहोपरांत प्रतिभा आर्य हैं, लेकिन कहां हैं, यह पता नहीं चल सका। फिर एक दिन 'राष्ट्रीय विरजानंद अंध कन्या विद्यालय' के नेत्रहीन प्रधानाचार्य श्री गुरूदत्त आर्य से पूछा तो वे हंसकर बोले, ''जी हां, प्रतिभा आर्य ही पहली नेत्रहीन ग्रेजुएट महिला हैं और वे मेरी पत्नी हैं।''

आश्चर्य! पति-पत्नी दोनों उच्च शिक्षा प्राप्त और दोनों ही नेत्रहीन! कैसे कार्य चलाते होंगे? सामान्य व्यक्ति न सही, अन्य किसी तरह से बाधित व्यक्ति का साथ भी तो चुन सकते थे, ताकि एक-दूसरे के सहारे सुविधा होती। उत्सुकता जागी और मैंने श्रीमती प्रतिभा आर्य से मिलने की अपनी इच्छा प्रकट की। श्री आर्य ने इसे सहर्ष स्वीकार किया और समय निश्चित हो गया।

प्रतिभाजी ने बताया, ''मैट्रिक पास किया था तब भी अकेली लड़की थी। पत्रों में समाचार के साथ चित्र भी प्रकाशित हुआ था तो कई नेत्र-युक्त विद्वानों की ओर से विवाह प्रस्ताव

आए। तब आगे पढ़ने का विचार था, अतः इस दिशा में सोचना ठीक नहीं समझा। प्रस्ताव बाद में भी मिले, लेकिन तब तक मैं यह निश्चय कर चुकी थी कि विवाह करूंगी तो नेत्रहीन से ही। पति को पत्नी देख न पाए तो दोनों को संतोष नहीं होता। पति में हीन भावना जागती, पत्नी में अपराधी भावना और इस स्थिति की कल्पना ही मुझे असह्य थी। मैं दया की भीख नहीं लेना चाहती थी। कभी किसी रूप में नहीं चाही। मां-बाप तथा भाई-बहनों की ओर से बहुत विरोध हुआ, पर मेरे निश्चय के सामने उन्हें झुकना पड़ा। कुछ कठिनाई भले ही हों, किंतु आज भी मैं अपने इस निर्णय को सही मानती हूं।

'कुछ कठिनाई' वाली उनकी बात की दाद देते हुए भी समाधान नहीं हो पा रहा था कि दोनों व्यक्ति दैनिक कार्य कैसे चलाते होंगे। पूछने पर प्रतिभाजी ने बताया, ''आर्यजी के पहले विवाह से एक बेटी है। वह नेत्र-युक्त है। अब विवाहित और बच्चों वाली है। वह हमारे पास ही रहती है। उसके पति भी नेत्रहीन हैं और यहीं शिक्षक हैं, पर इसका मतलब यह नहीं कि हम तीनों प्राणी केवल उसी के सहारे चलते हैं। उसे बच्चों तथा घर के काम से फुरसत नहीं मिलती। हम लोग अपना काम चलाने में आत्मनिर्भरता के आदी हैं। मैं अपना सब काम स्वयं करती हूं। सफर भी अकेले ही करती हूं। घर का सब काम करती हूं। बताइए, कौन सही चीज कहां से उठा कर ला दूं? किसी तरह की हीनता, दयनीयता या असमर्थता का रंग चेहरे पर लाए बिना वे सामान्य व्यक्ति की तरह सहज ढंग से बात कर रही थीं।

प्रतिभाजी ने आठ मास की अवस्था में ही अपने नेत्र खो दिए थे। उनके एक भाई तथा एक बहन भी नेत्रहीन हैं। पिता प्रोफेसर थे। उन्होंने बालिका प्रतिभा की प्रतिभा देखकर उसे सात वर्ष की अवस्था में कलकत्ता के 'बिहाला ब्लाइंड स्कूल' में भरती करवा दिया। आठवीं तक शिक्षा पाने के बाद वे 'ऑल इंडिया लाइट हाउस फॉर द ब्लाइंड' में रहने लगीं। वहां उनके लिए निःशुल्क निवास तथा भोजन की व्यवस्था हो गई। फिर उस संस्था की ओर से उन्हें 'कालीधन इन्स्टीट्यूट' में आगे अध्ययन के लिए दाखिला करा दिया गया। संगीत वह संस्था में सीखती थीं और मैट्रिक की पढ़ाई के लिए इस स्कूल में जाती थीं।

स्कूल में सभी लड़कियां नेत्र-युक्त थीं, अकेली वही नेत्रहीन थीं। नोट्स ब्रेल लिपि में लिखती थीं और शेष सहायता अपनी सहपाठिनियों से लेती थी। प्रतिभाजी के अनुसार, ''निश्चय ही इस तरह परिश्रम अधिक करना पड़ता है और दूसरों की सहायता पर भी निर्भर रहना पड़तर है, पर एक तो मुझमें लगन थी, दूसरे मेरी सहपाठिनियों और शिक्षकों ने भी मेरी बहुत मदद की। आगे कॉलेज में भी यही क्रम चलता रहा।

''परीक्षा में लेखन की सहायता तो मिलती ही थी। 'साउथ कलकत्ता गर्ल्स कॉलेज' से कलकत्ता विश्वविद्यालय की मैं नियमित छात्रा थी। कॉलेज में भी अकेली नेत्रहीन छात्रा होने से सब लोग मेरे साहस की प्रशंसा करते और मेरी सहायता भी करते, जिससे मेरी लगन और बढ़ जाती।''

प्रतिभाजी ने इतिहास विषय लेकर एम.ए. की परीक्षा दी थी, किंतु छह अंकों से रह गईं। फिर नौकरी आदि अन्य कारणों से दोबारा परीक्षा नहीं दे पाईं। नौकरी के कारण बी.ए. की पढ़ाई भी उन्होंने बीच में एक बार छोड़ दी थी। परीक्षा के कुछ समय पहले जब उन्हें बंबई के 'दादर अंध विद्यालय' से अध्यापन कार्य के लिए बुलाया गया तो नौकरी के लालच में वे पढ़ाई छोड़कर चली गईं। फिर जब विद्यालय के व्यवस्थापकों ने उन्हें परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी तो उन्हें अपनी भूल का अहसास हुआ। वे नौकरी छोड़कर परीक्षा में बैठीं और सफल हुईं। इस प्रकार सन् 1952 में पच्चीस वर्ष की अवस्था में उन्होंने बी.ए. की परीक्षा पास कर 'भारत में प्रथम नेत्रहीन महिला स्नातक' होने का गौरव प्राप्त किया। मैट्रिक की तरह इस बार भी उनका चित्र कई पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ था।

सन् 1957 से प्रतिभाजी दिल्ली में हैं। सन् 1957 से 1959 तक 'राष्ट्रीय विरजानंद अंध कन्या विद्यालय' न्यू राजेन्द्र नगर में अध्यापन कार्य करती रहीं। सन् 1960 में इसी विद्यालय के संस्थापन आचार्य श्री गुरूदत्त आर्य से उनका विवाह हुआ। सन् 1962 में 'ब्लाइंड सोशल वेलफेयर सोसाइटी' के पंचकुईया रोड़ स्थित स्कूल में अध्यापन कर रही थीं और वहीं एक क्वार्टर में अपने पति के साथ रहती थीं। सन 1964 में उन्होंने अपनी 'टीचर ट्रेनिंग' भी पूरी कर ली। पर जीवन में संघर्ष झेलकर शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने वाली इस साहसी नारी को इतना भी वेतन नहीं दिया जाता था कि ठीक प्रकार से गुजर हो सके।

फिर भी श्रीमती आर्य को अपने व्यक्तिगत जीवन से कोई शिकायत नहीं रही, ''मेरा वेतन कम है तो क्या, प्रधानाचार्यजी (उनके पति) के वेतन को मिलाकर कार्य चल ही जाता है। दान से चलने वाली संस्थाएं अधिक वेतन नहीं दे सकतीं।''

उन्हें शिकायत थी तो यह कि हमारे देश में नेत्रहीन व्यक्तियों, विशेषकर लड़कियों की शिक्षा के लिए समुचित प्रबंध नहीं हैं। ब्रेल-साहित्य तो बहुत ही कम है। प्रत्येक राज्य में एक ब्रेल प्रेस होनी चाहिए, ताकि नेत्रहीनों के लिए अधिक पुस्तकें एवं पत्रिकाएं छप सकें। तब उन्होंने यह भी शिकायत की थी कि हर साल वह विदेश जाने के लिए प्रार्थना

पत्र भेज रही हैं, पर उन्हें अवसर नहीं दिया जाता। प्रति वर्ष 'रॉयल नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ब्लाइंड', इंग्लैंड तथा 'पारकिंस इंस्टीट्यूट फॉर द ब्लाइंड', अमेरिका की ओर से नेत्रहीन व्यक्तियों के प्रशिक्षण के लिए नेत्रहीन तथा नेत्रयुक्त मिलाकर 12 भारतीय शिक्षकों को आमंत्रित किया जाता है। यदि उन्हें यह छात्रवृत्ति मिल जाती तो विदेश जाकर नेत्रहीन-शिक्षण की नई तकनीकों का अध्ययन करने की भी उनकी तीव्र इच्छा थी।

''यदि आपको यह छात्रवृत्ति मिल जाए तो आप अकेले विदेश यात्रा करेंगी या किसी को साथ ले जाने की आवश्यकता पड़ेगी? इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा था, ''अकेले, (बाद में एक दिन उन्होंने बताया था कि सितम्बर, 70 में अमेरिका जाकर वे अपनी इच्छा पूरी कर आई हैं और अकेली ही गई थीं)। मैं अकेले ही सफर करती हूं। सभी जगह आती-जाती हूं, सब काम चला लेती हूं। आदत हो गई है। कोई विशेष कठिनाई नहीं लगती। संगीत अब छोड़ दिया है। स्कूल में दस्तकारी सीखी थी, वह भी लगभग छूट गई है, पर शिक्षण से बचे समय में घर का सब काम करती हूं। सामान्य-ज्ञान की ब्रेल पुस्तकें पढ़ती हूं। सभा सम्मेलनों में भी जाती हूं। इसलिए अपनी व्यक्तिगत स्थिति से मुझे कोई शिकायत नहीं है। जीने के लिए साहस चाहिए, पर वह सहज हो, जबरदस्ती थोपा हुआ या जुटाया हुआ नहीं। अन्यथा साहस रहने पर भी उसका आनंद नहीं रहेगा। उसे थकान पैदा होगी। अंहकार तो होगा ही। मैं नेत्रहीन जरूर हूं, पर जीवन को सहज ढंग से जीना जानती हूं या यों समझिए कि सीख गई हूं।''

उनके इस सहज संभाषण से लगा था, भारत की हेलन केलर में भारत के दर्शन की आत्मा बोल रही है। अब उनके पति श्री गुरूदत्त आचार्य का साथ भी उनसे छूट चुका है। अपनी नौकरी से भी वह सेवानिवृत्त हो चुकी हैं। वैधव्य और बुढ़ापे में एकाकी जीते हुए वह लड़की ही उनका सहारा है। 23 मार्च, 1970 को प्रतिभाजी को 'राष्ट्रीय पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। सन 1972 में दिल्ली प्रशासन द्वारा पुरस्कृत नेत्रहीन शिल्प-शिक्षकों में भी उनका नाम था।

******

दो अक्षर का होता है लक,
ढ़ाई अक्षर का होता है भाग्य,
तीन अक्षर का होता है नसीब
साड़े तीन अक्षर का होता है किस्मत,
पर ये चारों के चारों
चार अक्षर के मेहनत से छोटे होते हैं।

घोघा जल संचयन परियोजना, भावनगर, सौराष्ट्र, गुजरात के पूर्ण होने के 14 वर्ष पश्चात् उक्त ग्रामीण क्षेत्र में अनुकूल प्रभाव

एफ.आर.शेरवानी
परियोजना प्रबंधक

(यह लेख, लेखक द्वारा वाप्कोस की गृह पत्रिका 'वाप्कोस दर्पण' के अंक-40, जनवरी-मार्च, 2006 में प्रकाशित ''घोघा वर्षा जल संचयन परियोजना, एक स्वर्णिम गौरव गाथा'' की अगली कड़ी है)।

मुझे वर्ष 2003 से 2005 तक वाप्कोस फील्ड यूनिट, भावनगर में कार्य करने का अवसर मिला, जो तत्कालीन मुख्य अभियंता (बी.डी.), माननीय श्री आर.के.गुप्ता जी (वर्तमान में अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस) के तहत था। यह योजना गुजरात सरकार के उपक्रम वासमो द्वारा वाप्कोस को प्रदान की गई थी, जिसका नाम **''घोघा जल संचयन योजना भावनगर के 82 गांवों में''** था।

इस परियोजना के मुख्य उद्देश्य निम्न हैं:-

1. ग्रामीण स्तर पर जल संचयन के लिए उपयुक्त जगह का चुनाव, ताकि गांव के जल स्तर का समुचित विकास हो सके।
2. फैसिबिलिटी रिपोर्ट तैयार करना
3. भू सर्वे करना
4. हाइड्रो जियोलाजिकल रिपोर्ट तैयार करना
5. विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करना
6. निविदा तैयार करना
7. योजना का स्थल पर क्रियान्वयन करना
8. सम्पूर्ण गुणवत्ता के साथ

प्रतिकूल परिस्थिति में वाप्कोस अभियंताओं, जिन में मुख्य रूप से लेखक का उल्लेखनीय योगदान रहा, केवल 2 वर्ष से भी कम अवधि में योजना को सफलतापूर्वक समय से पूरा करके सम्पूर्ण क्षेत्र में विशेषकर गुजरात में अमूमन वाह-वाह, भूरी-भूरी प्रशंसा एवं ख्याति प्राप्त की।

1 मई, 2005 को ''गुजरात दिवस'' की पूर्व संध्या के अवसर पर, भावनगर के गंगाजलिया तालाब में, गुजरात के तत्कालीन मुख्य मंत्री मा. श्री नरेन्द्र मोदी ने पूजा अर्चना की और अगले दिन यानि 2 मई, 2005 को ''82 गांवों में घोघा जल संचयन परियोजना'' का अन्य दूसरी लोक कल्याण योजनाओं का सार्वजनिक लोकार्पण किया गया। (टाइम्स ऑफ इंडिया (अहमदाबाद) द्वारा 2 मई, 2005 को प्रकाशित फोटो प्रस्तुत है)।

1 मई 2005 को "गुजरात दिवस" की पूर्व संध्या के अवसर पर, भावनगर के गंगाजलिया तालाव में, गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री मा. श्री नरेंद्र भाई मोदी ने पूजा अर्चना करते हुए (टाइम्स ऑफ़ इंडिया (अहमदाबाद) द्वारा, 2 मई 2005 को प्रकाशित

आज जुलाई, 2017 को मुझे गूगल अर्थ द्वारा यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि आज लगभग 14 वर्ष बाद भी भावनगर ग्रामीण क्षेत्र में हमारे द्वारा कठिन परिश्रम से तैयार हुई सफल परियोजना आज भी अति लाभकारी है एवं वाप्कोस द्वारा बनाए चेक डैम एवं तालाब आज भी वैसे ही हैं जैसा हम वर्ष 2005 में कार्य पूरा करने के बाद छोड़ कर आए थे और यह अपना उद्देश्य पूरा कर रहे हैं।

14 वर्ष पश्चात, योजना के अति सफल होने का प्रमाण गूगल अर्थ की 2003 (निर्माण पूर्व) एवं वर्ष 2017 (निर्माण के लगभग 14 वर्ष पश्चात की स्थिति), कुछ विशेष चित्र संलग्न हैं।

जैसा कि 2017 के गूगल चित्रों से परियोजना की सफलता विदित हो रही है:-

1. ग्रामीण क्षेत्र में हरित क्रांति आ गई है, वन एवं खेती में वृद्धि से साफ प्रतीत है।
2. भूजल विकास भी काफी हुआ है क्योंकि ''जल ही जीवन है''।
3. जल स्रोत में आशातीत सफलता अपने आप प्रकट हो रही है।
4. मृदा संरक्षण में मदद मिली है।
5. जो क्षेत्र खम्बात की खाड़ी के करीब हैं, वहां न सिर्फ स्वच्छ जल का विकास हुआ, बल्कि समुद्र के खारे पानी का स्वच्छ जल में प्रवेश भी रुका है। जैसा कि अवणिआ, कोलियाक, भरापारा, भडभडिया, अलंग, मीठीविर्डी, सोसिया, पाद्रीगोहिल आदि (यह सभी तटीय क्षेत्र हैं जहां खारे पानी की समस्या रही है) इलाकों की हरियाली में विगत 14 वर्षों में हुई वृद्धि से विदित है।

गूगल अर्थ से लिए गए घोघा परियोजना क्षेत्र के कुछ विशेष चित्र

तालाब विस्तार अवणिआ, भावनगर-2003	तालाब विस्तार अवणिआ, भावनगर-2017
कोलियाक का चेक डैम -2003	कोलियाक का चेक डैम-2017

गुंदी का चेक डैम-2003	गुंदी का चेक डैम-2017
होइदड का चेक डैम – 2003	होइदड का चेक डैम – 2017
तनसा का चेक डैम – 2003	तनसा का चेक डैम – 2017

भरापारा का तलाव – 2003	भरापारा का तालाब - 2017
रामपर का तालाब - 2003	रामपर का तालाब - 2017 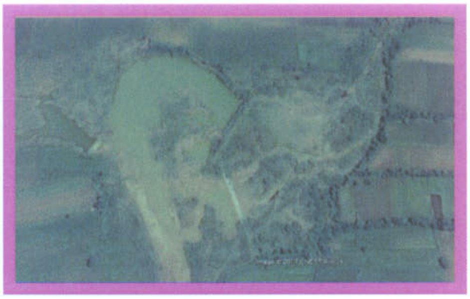
भड़भड़िया का तालाब - 2003	भड़भड़िया का तालाब – 2017

****

हम अपना ज्यादातर समय कुछ करने कि बजाए सोचने में बिता देते हैं और यही कारण होता है कि हमारे ज्यादातर सपने अधूरे हीं रह जाते हैं।

अनमोल रत्न : हीरा

साभार : प्रकृति के आश्चर्य
डा. विजय खन्ना

हीरा सबसे कठोर खनिज है। यह रत्नों का राजा है तथा पृथ्वी माता द्वारा मनुष्य को दी गई अनुपम देन है। हीरक चमक तथा झिलमिलाहट के गुण के कारण सभी इसकी ओर आकर्षित होते हैं। विश्व में प्रतिवर्ष 20 टन हीरा निकाला जाता है (टी.एम.बाबू, 1998)। इसकी सुंदरता, विलक्षणता तथा कठोरता के कारण यह सबसे अमूल्य रत्न है। प्राचीन भारत रत्न-विज्ञान में नौ रत्न वर्णित हैं। ये रत्न हैं – मणिक, नीलम, पुखराज, हीरा, पन्ना, मूंगा, मोती, गौमेध तथा वैदुर्य। इन रत्नों में हीरे का स्थान प्रमुख है।

हीरा केवल रत्न ही नहीं बल्कि एक औद्योगिक खनिज भी है जिसका उपयोग अपघर्षक तथा काटने के औजार के रूप में होता है इसका उपयोग बेधन बिट (Drilling bit) में होता है जिससे बेधन कर प्राकृतिक तेल निकाला जाता है। दंत विशेषज्ञों की बिट में भी हीरा जड़ा रहता है। हीरे का उपयोग खगोल विद्या, प्रयोगात्मक भौतिक विज्ञान तथा इलैक्ट्रॉनिक्स में भी होता है।

आम आदमी हीरे को हल्के रंग का पारदर्शी खनिज मानता है किन्तु हमेशा ऐसा नहीं होता। यह हीरे के चार प्रकारों से स्पष्ट है। हीरे का पहला प्रकार रत्न है। दूसरे प्रकार को बोरट्ज कहते हैं। यह पारभाषी से अपारदर्शी औद्योगिक हीरा है। तीसरे प्रकार को बेल्लास कहते हैं। यह सूक्ष्म गोल प्रवृति का क्रिस्टल होता है। चौथे प्रकार को कार्बोनेडो कहते हैं। यह काला या स्लेटी अपारदर्शी हीरा है तथा औद्योगिकी में उपयोग होता है।

हीरे का रासायनिक संघटन कोयले के समान 'कार्बल' है। सहसंयोजक बंध तथा चतु:संयोजकता के कारण हीरा बहुत कठोर होता है तथा उसका गलनांक भी अधिक होता है। हीरे के प्राकृतिक क्रिस्टल घनीय समुदाय के अंतर्गत आते हैं।

हीरा या तो सफेद पारदर्शी होता है या पीला, लाल, नीला, नारंगी, हरा, भूरा से लेकर पूर्ण काला तथा अपारदर्शी हो सकता है। ये रंग अशुद्धियों के कारण होते हैं। इनमें हीरक तथा ग्रीसी चमक पाई जाती है। हीरे का प्रमुख गुण उसकी कठोरता है। मोह के कठोरता मापक पैमाने पर यह सबसे अधिक 10 है। एक ही हीरे के भिन्न-भिन्न फलकों की कठोरता में थोड़ा-बहुत अंतर हो सकता है। आस्ट्रेलिया के हीरे दक्षिण अफ्रीका के हीरों की

तुलना में ज्यादा कठोर होते हैं। यद्यपि हीरा सबसे कठोर खनिज है किंतु यह कांच के समान भंगुर है तथा हथौड़े की चोट से आसानी से टूट जाता है। ज्यादातर हीरों में द्रव्य पदार्थ के अंतर्वेश होते हैं तथा कुछ अशुद्धियां होती हैं। हीरा विद्युत का कुचालक है किन्तु इसकी तापीय चालकता अधिक होने के कारण छूने पर ठंडा लगता है।

हीरे का 2.4 का आवर्तनांक, निम्न क्रांतिक कोण तथा झिलमिलाहट आदि गुण निराले होते हैं तथा इस खनिज को सबसे अमूल्य रत्न बनाते हैं। यदि हरे के ऊपर पैराबैंगनी किरणों का विकिरण किया जाए तो वह प्रतिदीप्ति का गुण प्रदर्शित करता है और उसमें से नीली तथा बैंगनी रंग का प्रकाश निकलने लगता है।

हीरे का आकार बहुत ही छोटे कणों से लेकर नारंगी के बराबर हो सकता है। हीरे का आकार, उसके वजन के आधार पर 'कैरेट' के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। एक कैरेट 0.20 ग्राम होता है। विश्व में पाया जाने वाला अब तक का सबसे बड़ा हीरा कुलिनन (Cullinan) के नाम से जाना जाता है। यह दक्षिण अफ्रीका में पाया गया। इसका वजन 3106 कैरेट्स या 621 ग्राम था। यह विशालकाय हीरा सन् 1905 में प्रिटोरिया के पास प्रीमियर खदान में पाया गया।

हीरे की कीमत उसकी काट, रंग, पारदर्शिता तथा कैरेट पर आधारित है। फैंसी रंगों के हीरों की कीमत बहुत अधिक होती है। अक्टूबर, 1997 में केवल एक कैरेट के बैंगनीपन लिए लाल रंग तथा नाशपाती आकृति के हीरे को न्यूयार्क में दो लाख बाइस हजार में बेचा गया।

हीरे ने मानव को सदियों से प्रभावित किया है। इसके कारण जंग भी लडे गए हैं। अन्य किसी खनिज ने हमारा ध्यान इतना अधिक आकर्षित नहीं किया, किसी अन्य खनिज पर इतने अध्ययन नहीं हुए और किसी अन्य खनिज के विषय में इतना साहित्य भी उपलब्ध नहीं है।

लगभग 250 वर्ष पूर्व तक भारत ही हीरे के व्यापार में सबसे प्रमुख देश था जो खनन, कटिंग-पॉलिशिंग तथा निर्यात करता था। हीरे के नए क्षेत्रों का पता लगाने के पश्चात भारत की छवि 'हीरे के देश' के रूप में मंद होती गई। विश्व में हीरा दक्षिण अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, ब्राजील, रूस, भारत, चीन आदि देशों में पाया जाता है। भारत आज भी हीरे का सबसे बडा निर्यातक देश है। विश्व में हीरे की प्राप्ति ज्यादातर विषुवत रेखा (Equator) के दक्षिण में ही होती है तथा ये आर्कियन शील्ड क्षेत्र में ही पाए जाते हैं। भारत में हीरा प्रमुख रूप से मध्यप्रदेश, आंध्रप्रदेश तथा उड़ीसा की महानदी घाटी क्षेत्र में पाया जाता है।

संस्कृत में हीरे का अर्थ वज्र होता है। भारतीय वेद के अनुसार इंद्र भगवान के पास 'वज्रयुद्धम' नामक एक अस्त्र था जो वज्र या हीरे का बना था। बिना तराशा प्राकृतिक हीरा 'रफ' कहलाता है। कटिंग एवं पॉलिशिंग के पश्चात वह रत्न बन जाता है। वर्तमान में हीरे की कटिंग एवं पालिशिंग के प्रमुख केन्द्र सूरत, मुम्बई, जयपुर तथा उदयपुर हैं। इस कार्य के लिए कुशल कारीगरों की आवश्यकता होती है।

हीरे की उत्तमता बढ़ाने के लिए कई तकनीक उपलब्ध हैं। हीरे में कार्बन के अंतर्वेश हटाने के लिए लेजर तकनीक का उपयोग होता है। दरारें भरने के लिए रेजीन या कांच-कठोर पदार्थ का उपयोग होता है। ये सीमेंट सामान्य आंखों से दिखाई नहीं देते। उच्च ताप एवं दाब से कुछ हीरों को मनपसंद रंगों में बदला जा सकता है। नाभिकीय विकिरण से भी हीरे के रंग को उन्नत तथा ब्लीच, दोनों ही किया जा सकता है।

वर्तमान युग नकल या कॉपी का युग है। वर्तमान में कुछ उदाहरण देखने में आए हैं जहां अन्य रत्नों या संश्लेषित पदार्थों को हीरे के रूप में बेचा गया है। इन संश्लेषित रत्नों में 1970 के दशक में रूसी वैज्ञानिकों के द्वारा बनाया गया अमेरिकन डायमंड है। इसे जिरकोनियम ऑक्साइड से बनाया जाता है तथा इसका गलनांक 2750^0 सेंटीग्रेट है। वर्ष 2007 के एक घटनाक्रम में कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय (अमेरिका) के वैज्ञानिकों ने एक अतिकठोर, असंपीडयित पदार्थ, रैनियम डाइबोराइड (Rhenium Diboride) बनाया जो हीरे पर खरोंच उत्पन्न कर सकता है।

सिलिकान कार्बाइट द्वारा संश्लेषित पदार्थ मॉयसेनाट (Moissanite) गुणों में हीरे के समान है तथा दोनों में विभेद करना कठिन कार्य है।

असली तथा नकली हीरे में विभेद करना आसान कार्य नहीं है। हीरे में कुछ विभेदीय गुण होते हैं जो अन्य खनिजों में नहीं पाए जाते। इन्हीं गुणों के आधार पर कुशल आंखें असली हीरे को पहचान सकती हैं। हीरे को पहचानने के लिए एक पेन का भी अविष्कार किया गया है। इसमें एक विशेष प्रकार की नीले रंग की स्याही होती है जो आसानी से नहीं सूखती। इस पेन से असली हीरे पर निशान बनाए जा सकते हैं किन्तु अन्य खनिजों या पदार्थों पर नहीं।

हीरे के विवरण में भारत के प्रसिद्ध ऐतिहासिक कोहिनूर हीरे का जिक्र आवश्यक है। इस हीरे की जानकारी सन 1304 से है। कोहिनूर हीरे का प्रथम मान्य प्रसंग सुल्तान बाबर तिमूर के मेमॉयर (Memoir) में मिलता है। कोहिनूर की प्राप्ति कोलूर आन्ध्र प्रदेश में कृष्णा नदी में हुई थी। प्रारंभ में यह 733 कैरेट का था। इसे तराश कर सुंदर बहुफलीय

आयाम दिया गया, जिससे यह केवल 186 कैरेट का रह गया। सन 1862 में रानी विक्टोरिया ने इसे एम्स्टरडम के जाने माने कारीगर वूरसेंगर द्वारा पुनः तरशवाया। इसके पश्चात कोहिनूर केवल 106 कैरेट का रह गया (बाबू, 1998)। वर्तमान में कोहिनूर हीरा इंग्लैड के शाही परिवार की संपत्ति है। अन्य प्रख्यात हीरों में विश्व का सबसे बड़ा नीले रंग का हीरा 'होप' भारत की देन है। इसका कैरेट 45.5 है। 'टिफैनी' हीरा टिफैनी एंड कम्पनी, न्यूयार्क की संपत्ति है। यह दक्षिण अफ्रीका में पाया गया। इसका कैरेट 128.51 है।

ब्रह्मांड में हीरा भरा पड़ा है तथा ऐसी मान्यता है कि पृथ्वी पर हीरे का पाया जाना उल्कापिंडों से भी जुड़ा है। साईबेरिया के पोपीगई स्थान पर विशाल उल्कापिंड के गिरने से हीरे का सांद्रण बड़ी मात्रा में हुआ। प्राकृतिक अवस्था में किम्बरलाइट शैलों, संगुटिकाश्म, ग्रिट तथा प्लेसर निक्षेप के रूप में मिलने वाला हीरा सुंदरता तथा खुशी का प्रतीक है। भारत विश्व का सबसे बड़ा हीरा निर्यातक है तथा भारत के लिए यह गर्व की बात है कि भारत में तकनीकी ज्ञान, कार्यकुशलता कारीगर तथा इसके कारोबार को बढ़ावा देने वाले पूंजीपति मौजूद हैं, जिससे भारत का नाम विश्व हीरे के नक्शे पर आज भी बना हुआ है।

****

धूर्त से दोस्ती

उज्जयिनी के मार्ग में एक बरगद था। उसी क्षेत्र में एक हंस ने एक धूर्त कौए के साथ दोस्ती की थी। वह उसी पेड़ पर रहने लगा। गर्मी का मौसम था। एक दिन एक धनुर्धारी मुसाफिर उस पेड़ के नीचे लेटकर आराम करने लगा। उसके चेहरे पर धूप पड़ रही थी। यह देखकर हंस ने सोचा कि बेचारे की थोड़ी मदद कर दूं। हंस पंख फैलाकर मुसाफिर को छाया देने लगा। कुछ देर बाद कौआ भी वहीं आया। उसे हंस का काम अच्छा नहीं लगा। उसने मुसाफिर के चेहरे पर बीट कर डाली और उड़ गया। मुसाफिर अचकचा कर नींद से जागा। उसने बीट पोंछते हुए ऊपर देखा। हंस अपनी सेवा में निरत पंख फैलाए वैसे ही बैठा था। मुसाफिर ने सोचा कि इसी ने बीट डाली है। उसने तीर से हंस को मार दिया। स्वभाव या गुणधर्म के आधार पर ही किसी प्राणी या वस्तु की परख होती है। दोस्ती से पहले उसे परखना चाहिए , वरना गुणवान को भी किसी गुणहीन के अनकिए का दंड भोगना पड़ता है।

*****

विश्वास – सफलता का सन्मार्ग

निम्मी भट्ट
प्रमुख (रा.भा.का.)

''ईश्वर कहते हैं उदास न हो, 'मैं' तेरे साथ हूं,
सामने नहीं आस-पास हूं
पलकों को बंद कर और दिल से याद कर,
मैं कोई और नहीं तेरा 'विश्वास' हूं।''

बिल्कुल सत्य। विश्वास एक संबल है, एक मजबूत आधार है। क्योंकि विश्वास में बड़ी शक्ति है। इंसान विश्वास के बल पर अंधेरे में भी राह खोज लेता है और उसके बिना उजाले में भी राह भटक जाता है। जिसे स्वयं पर विश्वास होता है उसके सामने बड़ी से बड़ी समस्या ज्यादा देर टिक नहीं सकती।

हमें अपनी कठिनाईयों पर जीत हासिल करने के लिए सर्वप्रथम अपनी क्षमताओं पर, अपनी शक्ति पर विश्वास करना होना। तभी असंभव रूपी शब्द को मार्ग से हटाया जा सकता है और असंभव को संभव करके दिखाया जा सकता है। जिस तरह वृक्ष बनने से पहले बीज को कई संघर्ष करने पड़ते हैं उसी तरह हमें भी कई कठिनाईयों व चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। अपनी शक्तियों व क्षमताओं पर विश्वास किए बिना आगे नहीं बढ़ा जा सकता। न ही चुनौतियों को स्वीकार किया जा सकता है और न ही विजय ही प्राप्त की जा सकती है।

विश्व में ऐसा बहुत कुछ होता है जिसे देखकर आश्चर्य होता है कि ये कैसे हो सकता है। परन्तु किसी ने तो वह कार्य किया है। क्योंकि छोटा-सा कार्य करने के लिए भी जरूरी है मन में विश्वास कि हम यह कर सकते हैं। यदि इतना भी विश्वास नहीं तो वह छोटा-सा कार्य करने से पहले ही हम हार जाएंगे, उसे पूरा करना तो दूर की बात है। इसलिए जीतने से पहले जीतने पर विश्वास होना जरूरी है। किसी भी आश्चर्यजनक अथवा असंभव कार्य करने के लिए अत्याधिक परिश्रम, अभ्यास, लगन, साहस के साथ अपने ऊपर विश्वास जरूरी है। हम विश्वास के साथ ही किसी भी असंभव या कठिन कार्य को करने का बीड़ा उठाते हैं और सफलता प्राप्त करते हैं। जो जितनी अधिक मेहनत व प्रयास करता है, उसके लिए कार्य उतना ही आसान होता है। भले ही वह कार्य दूसरे के लिए कठिन हो। ऐसे व्यक्ति के सामने आने वाली हर समस्या उसके कदमों में दम तोड़ देती है।

विश्वास पर ऊंगली रखकर एकाग्र होकर सोचें कि सर्कस में दिखाए जाने वाले एक से बढ़कर एक कारनामें अभ्यास, मेहनत, लगन व विश्वास का ही नतीजा है कि कलाकार अपनी जान हथेली पर रखकर एक से बढ़कर एक करतब दिखाते हैं। हम भी जिंदगी की सर्कस रूपी विभिन्न चुनौतियों से घिरे हैं और मन में विश्वास न होने के कारण उन्हें स्वीकार करने से घबराते हैं। कदम आगे बढ़ाने से पहले ही शंका में पड़ जाते हैं कि यह कर पाएंगे या नहीं। कुछ करने से पहले ही हार स्वीकार कर लेते हैं, जो हमारे विकास में बाधक है। हमें याद रखना होगा कि हमारी शक्तियां हमारे अंदर बीज के रूप में विद्यमान हैं। आवश्यकता है केवल इन्हें जागृत करने की और स्वयं पर विश्वास रखने की। हमारे द्वारा विश्वास करते ही ये शक्तियां सक्रिय हो जाती हैं और हम सफलता के पड़ाव पार करते चलते हैं।

हम अपने सामर्थ्य और शक्तियों को कैसे पहचाने और कैसे विश्वास करें कि यह हम कर सकते हैं। एक नन्हें से बीज में एक विशाल पेड़ बनने का सामर्थ्य छिपा है। उसी तरह हमारे भीतर भी अनगिनत सम्भावनाओं की शक्ति बीज के रूप में विद्यमान है। इसलिए हमें स्वयं पर विश्वास करना होगा तभी हम उन शक्तियों का प्रयोग कर पाएंगे। हमारे चारों ओर विकास के कई रास्ते हैं पर परिस्थितियां अत्यंत जटिल हैं। हम किस रास्ते पर आगे बढ़े यह दुविधा रहती है। बस हमें याद रखना है कि जीवन की जटिल परिस्थितियां एक चुनौती भर है। परिस्थितियां कितनी भी कठिन हों, हमें अपने विश्वास को डगमगाने नहीं देना है क्योंकि विश्वास से स्वतः ही इन जटिल परिस्थितियों से बाहर निकलने की शक्ति आ जाती है। यह शक्ति हमारे अंदर ही है कहीं और नहीं। इसलिए परिस्थितियां जीवन में कैसी भी हों यदि अपने ऊपर विश्वास है तो मंजिल पाने से कोई नहीं रोक सकता।

एक छोटी सी कहानी के माध्यम से विश्वास की शक्ति के बारे में बताती हूं:- एक नवयुवक था जो भीड़ से डरता था। यह डर बचपन से उसके भीतर था जो बड़े होने के साथ-साथ बढ़ता गया और इतना बढ़ गया कि वह घर से बाहर निकलने पर डरने लगा परन्तु अपनी पढ़ाई के लिए उसे मजबूरन कालेज जाना पड़ता था। कालेज आते-जाते समय भीड देखकर उसका मन परेशान हो जाता। इस कारण न तो उसका मन पढ़ाई में लगता और न ही किसी और काम में। वह सोचता इस डर के कारण वह अपनी जिन्दगी में कभी सफल नहीं हो पाएगा। इससे उसका गुस्सा भी बढ़ने लगा। एक दिन वह अपनी इस समस्या के समाधान के लिए एक बहुत बड़े व प्रसिद्ध संत के पास गया और अपनी पूरी समस्या संत को बता दी। संत ने मुस्कुराते हुए कहा ''तुम्हारी समस्या का समाधान मेरे पास है पर तुम्हें मेरे ऊपर विश्वास हो तो मैं समाधान तुम्हें बता सकता हूं।''

उसने कहा आप पर विश्वास करके ही आया हूं। कृपया मुझे समाधान बताएं। तभी संत ने एक बहुत छोटा-सा सफेद पत्थर उसे देते हुए कहा कि 'यह एक जादुई पत्थर है।' यह जिसके पास होता है उसे डर नहीं लगता और यह हर समस्या में सहायता भी करता है।

अगले दिन जब वह कालेज जाने लगा तो उसने उस सफेद पत्थर को अपने पास रख लिया। घर से बाहर जब उसका सामना भीड़ से हुआ तो उसे डर लगा पर सफेद पत्थर का ध्यान आते ही उसका डर भाग गया और उस दिन से उसे भीड़ से बिल्कुल डर नहीं लगा। वह खुश था और सोचने लगा कि पत्थर काम कर रहा है। अब डर न लगने के कारण वह आराम से यहां वहां आने-जाने लगा और खुश भी रहने लगा। उसे विश्वास होने लगा कि वह जीवन में कोई भी सफलता प्राप्त कर सकता है। उसका जीवन बदल चुका था। वह एक सफल इंसान के रूप में गिना जाने लगा। एक दिन उसे उस संत की याद आई और वह उनसे मिलने पहुंच गया। उसने संत को अपनी सफलता के बारे में बताया और सफेद पत्थर की जादुई शक्ति की तारीफ करने लगा। तब संत ने बताया कि यह एक साधारण पत्थर है। इसने तुम्हें कोई लाभ नहीं पहुंचाया बल्कि तुम्हारी विश्वास की शक्ति ने तुम्हारे डर को भगाया है और तुम्हें सफल बनाया है। तुम्हें खुद पर विश्वास नहीं था इसलिए तुम अपने डर पर विजय प्राप्त नहीं कर पा रहे थे। लेकिन जब मैंने तुम्हें यह सफेद पत्थर दिया तो तुम्हारे अंदर विश्वास पैदा हो गया। तुम्हारे विश्वास के कारण ही डर भाग गया और डर के जाते ही तुम्हारा आत्मविश्वास और ज्यादा बढ़ गया। जैसे-जैसे तुम सफल होते गए वैसे-वैसे तुम्हारा खुद के लिए विश्वास बढ़ता गया और इसी विश्वास की वजह से आज तुम एक सफल व्यक्ति बन गए।

डर एक समस्या है जिससे जितना दूर भागो वो उतना ही करीब आएगा। विश्वास की शक्ति का डट कर सामना करोगे तो वो भाग खड़ा होगा। यदि आप सफल होना चाहते हैं तो खुद पर विश्वास करो, अपने कार्यों पर विश्वास करो, अपनी सफलता के लिए किए गए प्रयासों पर विश्वास करो। जब आपको खुद पर विश्वास हो जाएगा तो आप सफलता की ओर कदम बढ़ाते चले जाओगे और एक दिन सफलता के शिखर पर पहुंच कर दूसरों के लिए प्रेरणा के स्रोत बन जाओगे।

अंत में इतना ही कहूंगी कि –

मनुष्य अपने विश्वास से निर्मित होता है,
जैसा वो विश्वास करता है, वैसा ही बन जाता है।

****

मन चंगा तो कठौती में गंगा

साभार : कहावतों की कहानियां
लेखक : राधाकांत भारती

भक्त रैदास अपने घर के बाहर सड़क पर बैठकर जूते गांठा करते थे। एक दिन उसी रास्ते, किसी पर्व के अवसर पर, एक पंडितजी गंगा-स्नान के लिए जा रहे थे। चलते-चलते उनका जूता फट गया। मार्ग में मोची को पाकर जूता गंठवाने खड़े हो गए। रैदास पहले किसी दूसरे का जूता गांठ रहे थे। पंडितजी बोले, ''भाई, मेरा जूता जल्दी गांठ दे, मुझे गंगाजी जाना है।''

रैदास ने कहा, ''हाथ में लिया पहला काम पूरा करके बस आपका काम करता हूं। बैठ जाइए। जल्दी ही हो जाएगा।''

पहला काम निबटाकर रैदास मन लगाकर पंडितजी के जूते की सिलाई कर रहे थे। पंडितजी बोले, ''अरे चमरू, इतना बड़ा पर्व है, हम लोग बीस-बीस कोस चलकर नहाने आए हैं, तेरे तो यह कोस भर पर गंगा है, क्या तू नहाने न जाएगा।''

रेदास काम को पूरा करते हुए बोले, ''महाराज, मैं गरीब आदमी गंगा नहाता रहूं तो बाल-बच्चों की रोटी का ठिकाना लगना कठिन हो जाएगा।''

पंडितजी बोले, ''तू गंवार है, तुझे आज के पुण्यपर्व के फल का पता नहीं, इसलिए ऐसा कहता है। वैसे तो तेरा न जाना ही ठीक है, चमार के गंगाजी में नहाने और उस जल के छींटे दूसरों को लगने-से अशुद्धता फैलेगी।''

रैदास ने इस ओर ध्यान न दिया और काम पूरा करके पंडितजी के आगे रख दिया। पंडितजी जेब से पैसे निकालकर रैदास को देने लगे। रैदास बोले, ''महाराज, मैं आपसे मजूरी नहीं लेना चाहता, मेरा बस एक कारज कर दीजिए।''

पंडितजी ने पूछा, ''वह क्या?"

रैदास बोला, ''ये दो सुपारी मेरी ओर से गंगाजी के भेंट चढ़ा दीजिएगा। लेकिन एक शर्त के साथ कि गंगाजी हाथ बढ़ाकर इन्हें लें तब।''

उसकी ऐसी ऐंठ पर पंडितजी मन में हंसे, पर रास्ता तय करने की जल्दी में तर्क-वितर्क में न पड़कर सुपारियां लेकर झोले में डाल लीं। घाट पर पहुंचकर नहाए-धोए, पूजा-पाठ किया। वापस लौटने को थे कि रैदास की दोनों सुपारियां याद आईं। सोचा लाओ, गंगाजी में फेंक चलें। पर रैदास के वचनों का स्मरण हुआ कि गंगाजी हाथ बढ़ाकर लें, तभी देना। रैदास ने यह बात कुछ ऐसे ढंग से कही थी कि पंडितजी उसे भूल नहीं सकते थे। पंडितजी को विश्वास तो न था कि ऐसा संभव भी हो सकता है, पर कहने में जाता ही क्या था। गंगाजी को सुनाकर बोले, ''ये रैदास की दो सुपारियां हैं। उसने कहा है कि गंगाजी हाथ बढ़ाकर लें तो दे देना।''

उसी समय जल में एक सुन्दर कोमल हाथ ऊपर निकला और सादर सुपारी लेकर अंदर हो गया। फिर तुरंत दूसरा हाथ एक सोने का सुंदर मूल्यवान कंगन लेकर पानी से ऊपर उठा। साथ ही कोई कहता सुनाई दिया कि यह प्रसादस्वरूप रैदास को देना और कहना कि तुम्हारी भेंट गंगा ने सप्रेम स्वीकार कर ली है।

इस चमत्कार ने ब्राह्मण को अचंभे में डाल दिया। मन में रैदास कें प्रति ईष्या पैदा हुई। घर लौटते हुए राह में रैदास का घर पड़ा, पर वह वहां ठहरने क्यों लगा? सोने के कंगन को देखते ही उसके मन में लोभ आ गया था। घर पहुंचते ही कंगन ब्राह्मणी को दिखाया। देखकर वह खुश हो गई। ब्राह्मणी को सारी घटना भी सुनाई, पर कंगन की खुशी में ब्राह्मणी ने उस बात पर अधिक ध्यान नहीं दिया। वह मग्न थी कि यह कंगन पाकर उनका जन्म–दरिद्रय दूर हो जाएगा। सुन्दर रत्न जड़ा सोने का कंगन। उसकी कीमत का क्या ठिकाना। ब्राह्मणी पंडित से बोली, ''इसे राजा के यहां ले जाकर भेंट करो, बड़ा इनाम मिलेगा। यह समझ लो कि अब भीख मांगने से हम लोगों का पिंड छूटा।''

विचार करके ब्राह्मण कंगन सहित राजा के दरबार में पहुंचे। राजा उस कंगन को भेंट स्वरूप पाकर बहुत खुश हुआ। पंडित को एक लाख रूपया पुरस्कार-स्वरूप देकर विदा किया। कंगन रानी के पास गया। देखकर वह उस पर लट्टू हो गई। हाथ में पहन कर देखा। सबने बड़ी तारीफ की। साथ ही उन्होंने कहा, ''महारानी का दूसरा हाथ सूना लगता है।'' राजा के पास इसकी सूचना पहुंची कि इसका जोडा चाहिए। फौरन पंडितजी तलब किए गए कि इसका जोड़ा लेकर आएं अन्यथा घर-बार लुटवाकर देश निकाला। राजा ही तो ठहरा, न उसे खुश होते देर लगती न कुपित होते। कहा भी है कि -

'राजा, जोगी, अग्नि, जल इनकी उल्टी रीत।
बचते रहिए गुनीजन, ये थोड़ी पाले प्रीत।'

पंडितजी घबराए हुए राजा के पास पहुंचे और कंगन पाने की सारी हकीकत कह सुनाई। राजा बोला, ''रैदास से जाकर कहो, गंगाजी से इसका जोड़ा लाकर दे।''

पंडितजी लाख रूपया लिए रैदास के पास पहुंचे। एक लाख रूपया उसके सामने रखा और सब बीती बात सुनाई। साथ ही रोते हुए बोले, ''भगत, किसी तरह मेरी जान बचाओ। गंगाजी के पास जाकर इसका जोड़ा लाकर दो। एक लाख तो यह लो और एक लाख का जोड़ा लाओगे उसका मिलेगा ।

रैदास ने कहा, ''महाराज, रूपयों की तो मुझे कोई आवश्यकता नहीं है, यह तो आप ले जाइए। गंगामाई मजूरी में खाने भर को देती ही है, और गंगाजी तक जाने का मेरे पास अभी समय नहीं है। मैं यों फिरता रहूं तो मेरे बाल-बच्चे भूखों मर जाएंगे। पर यह मैं अवश्य चाहता हूं कि आपको राजा का कोपभाजन न बनना पड़े।

इस पर ब्राह्मण उसके सामने बहुत गिड़गिड़ाकर बोला, ''तो जैसा तुम्हें उचित जान पड़े वैसा करो। लेकिन यथाशीघ्र कोई उपाय करो, कहीं राजा कुपित न हो जाए और कोई अनिष्ट न कर डाले।''

यह सब सुनकर पंडितजी की हालत देखते हुए रैदास भगत ने अपनी उसी चाम भिगोने वाली कठौती पर कपड़ा डाला और बोले, ''मन चंगा तो कठौती में गंगा।''

थोड़ी देर बाद कपड़ा उठाते ही उसमें से चमकता हुआ ठीक उसी तरह का जोड़ा कंगन दिखाई दिया। रैदास ने ब्राह्मण को कंगन देकर कहा, ''अब आप जल्दी कीजिए।'' ब्राह्मण ने रैदास से वह लाख रूपये रखने का बहुत आग्रह किया। परन्तु रैदास ने कहा, ''मैं अपनी मेहनत मजदूरी से सुखी हूं, संतुष्ट हूं, मुझे ज्यादा की जरूरत नहीं है, बाकी गंगा मैया सब पूरा कर देंगी।

रैदास को लाख रूपये लौटाते देखकर ब्राह्मण आश्चर्य में पड़ गया। एक-एक पैसे में जूता गांठनेवाला लाख रूपयों को ठुकरा रहा है। इसी से इसमें यह करामात है। यह संकल्प तथा समर्पण की भावना का चमत्कार है।

****

साधु की लंगोट

साभार : नवभारत टाइम्स्

एक बार द्रौपदी तड़के स्नान करने यमुना घाट पर गईं। जब वह घाट पर पहुंची तो पौ फटने को थी। उनका ध्यान सहज ही एक साधु की ओर गया। वह गंगा में स्नान कर रहे थे और उनके शरीर पर मात्र एक लंगोटी थी। साधु स्नान के पश्चात अपनी दूसरी लंगोटी लेने किनारे की ओर बढ़े। मगर तभी हवा का एक तेज झोंका आया जिससे किनारे पर रखी साधु की दूसरी लंगोट थोड़ी दूर उड़कर नदी में जा गिरी। साधु तेजी से उधर को झपटे, मगर पानी का बहाव उस लंगोट को अपने साथ बहा ले गया। संयोगवश साधु ने जो लंगोटी पहनी थी वह भी फट गई। अब साधु सोच में पड गए कि वह अपनी लाज कैसे बचाएं। थोड़ी देर में सूर्योदय हो जाएगा और घाट पर भीड़ भी बढ़ जाएगी। कुछ और उपाय न देख कर साधु तेजी से पानी से बाहर आए और झाड़ी में छिप गए। यह सब कुछ द्रौपदी देख रही थी। वह साधु के पास गईं और अपनी साड़ी आधी फाड़ कर उन्हें देते हुए बोली, 'मुनिवर, मैं आपकी परेशानी समझ गई। इस वस्त्र से अपनी लाज ढक लीजिए।' साधु ने सकुचाते हुए साड़ी का टुकड़ा ले लिया और आशीष दिया, 'जिस तरह आज तुमने मेरी लाज बचाई उसी तरह एक दिन भगवान भी तुम्हारी लाज बचाएंगे।' और जब भरी सभा में चीरहरण के समय द्रौपदी की करूण पुकार नारद ने भगवान तक पहुंचाई तो भगवान ने कहा, 'कर्मों के बदले मेरी कृपा बरसती है, क्या कोई पुण्य है द्रौपदी के खाते में?' जांच की गई तो उस दिन साधु को दिया वस्त्र दान हिसाब में मिला, जिसका ब्याज भी कई गुणा बढ़ गया था। उसको चुकता करने भगवान स्वयं द्रौपदी की मदद करने पहुंच गए। दु:शासन द्रौपदी की साड़ी खींचता गया और हजारों गज कपड़ा बढ़ता गया। सचमुच इंसान जैसा कर्म करता है उसका वैसा ही फल उसे सूद सहित मिलता है।

****

तुम अपने शुभ कर्मों रूपी बीज बोते रहो क्योंकि तुम्हें पता नहीं है कि इनमें से कौन सा फल देगा, हो सकता है कि सभी फल देने वाले हो जाएँ।

- अल्बर्ट आइन्स्टाइन

पुस्तकालय से

वाप्कोस विश्वेश्वरैया पुस्तकालय में अप्रैल-जून, 2017 के दौरान कार्यालय के प्रयोगार्थ हिन्दी की निम्नलिखित पुस्तकें खरीदी गई हैं।

क्रम संख्या	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम
1190	मेरी जीवन यात्रा: भारतीय इतिहास व संस्कृति के कुछ अनछुए पहलू	शीतला प्रसाद
1191	वीरता भरा जीवन	जगत आर्य
1192	मां की पुकार	भारतेन्दु प्रकाश सिंहल
1193	पृथ्वी की कहानी कितनी पुरानी	गौरी शंकर पाड्या
1194	भाड़े का रिक्शा	राजेश्वर उनियाल
1195	गांवों का शहरीकरण	धर्मवीर कुमार
1196	कार्यालयी हिन्दी एवं निबंध लेखन	पूरनचंद टंडन
1197	आजादी का आन्दोलन : हंसते हुए आंसू	महावीर त्यागी
1198	स्वतंत्रता सेनानी वी आदिवासी	शिवतोष दास
1199	तिश्नाकाम	संजय ठाकुर
1200	नेपोलियन बोनापार्ट	एमिल लुडविग
1201	स्वामी विवेकानंद के उपदेश एवं प्रेरक कथाएं	स्वामी विवेकानंद
1202	गोद में गांव	सत्य प्रकाश
1203	विश्वप्रसिद्ध महापुरूषों के प्रेरक प्रसंग	सुदर्शन भाटिया
1204	देखी पीर पहाड़ की	वेद विलास उनियाल
1205	सुधारात्मक विचारधारा	ईश्वर सिंह
1206	हमारा पर्यावरण और पेड़-पौधे (पर्यावरण)	वास आर्य
1207	अनाथ	निर्मला चौहान

सभी अधिकारी एवं कर्मचारी पुस्तकालय में उपलब्ध उक्त पुस्तकों से अपना ज्ञानवर्धन कर सकते हैं।

(पुस्तकालयाध्यक्ष)

****

अपराध से छुटकारा

साभार : नवभारत टाइम्स्

लंदन का वालवर्थ उपनगर अपराधियों की बस्ती के रूप में जाना जाता था। यहां के अधिकांश निवासी निर्धन और अशिक्षित थे। इसी वजह से अपराध का ग्राफ काफी ऊपर था। बस्ती के इस प्रदूषित माहौल ने बच्चों को भी अपनी चपेट में ले लिया था। छोटे-छोटे बच्चे भी गलत कार्यों में संलग्न थे। ऐसे समय में वहां एक दिन एक युवक कैंब्रिज यूनिवर्सिटी से अपनी शिक्षा पूरी करके आया। उसने पहले बस्ती के लोगों से परिचय बढ़ाया और धीरे-धीरे उनके साथ घुल-मिल गया। जब सभी उसे पसंद करने लगे, तब उसने अपने छोटे से कमरे में पहले बस्ती के बच्चों को पढ़ाना आरंभ किया। वह उन्हें दैनिक जीवन की छोटी, किन्तु महत्वपूर्ण बातें बताता और उदाहरणों से अपनी बातों की पुष्टि करता। फिरधीरे-धीरे वह उन्हें उत्तम संस्कार देने लगा। बस्ती के लोगों को महसूस हुआ कि यह व्यक्ति उनके बच्चों को सही शिक्षा दे रहा है क्योंकि उन्होंने बच्चों में कार्य व आचरण दोनों स्तरों पर काफी सुधार महसूस किया। इससे बस्ती के लोगों में युवक के प्रति विश्वास बढ़ा। युवक ने अपने काम को आगे बढ़ाते हुए लोगों से कहा – हर रविवार आप सभी कक्षा में आया करें। वे लोग तैयार हो गए। युवक ने उन्हें तैयार किया कि वे सप्ताह में एक दिन कोई अपराध न करें। युवक की अच्छाई से अभिभूत लोगों ने इसे भी स्वीकार कर लिया। फिर लोगों ने स्वयं ही तय किया कि वे चार दिनों तक कोई अपराध नहीं करेंगे। धीरे-धीरे वालवर्थ का पूर्णतः कायाकल्प हो गया और वह सभ्य समाज का एक अंग बन गया। वह समाज सुधारक युवक बाद में भारत आया, जिसे सी.एफ.एंड्रयूज दीनबंधु के नाम से जाना गया। यह सत्यकथा बताती है कि यदि संकल्प दृढ़ हो तो मार्ग में आने वाली बाधाएं हटती जाती हैं और सफलता के द्वार खुलते जाते हैं।

****

आत्म विश्वास बड़े से बड़ा असंभव दिखने वाला कार्य भी संभव कर दिखाता है।

\- स्वेट माइन

आपके पत्र

'राजभाषा पखवाड़ा' 2017

उप क्षेत्रीय कार्यालय
SUB REGIONAL OFFICE
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
प्लाट सं. 47 सैक्टर–34, गुरुग्राम–122001
PLOT NO. 47, SECTOR-34,GURUGRAM-122001
फोन सं. 0124–2370269, 2370333 ; फैक्स 0124–2370270
ई–मेल dir-gurgaon@esic.in

संख्याः 69ए/49/12/8/2009–रा.भा./773 दिनांकः 05/9/2017
08/09/17

सेवा में,
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक,
वाप्कोस लिमिटेड, 76–सी,
इन्स्टीट्यूशनल एरिया,
सैक्टर–18, गुरुग्राम–122015

विषयः गृह पत्रिका 'वाप्कोस दर्पण', जनवरी–मार्च, 2017 अंक 84 के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका 'वाप्कोस दर्पण' का जनवरी–मार्च, 2017 अंक 84 प्राप्त हुआ। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएँ एवं अन्य रचनाएँ ज्ञानवर्धक व रोचक हैं। विशेषकर 'असफलता सफलता से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है', 'अच्छे स्वास्थ्य के लिए', 'जाति प्रथा–भगवान भी न बच सके', तथा 'घटा पानी, बढ़ी चिंता' बहुत ही मनोरंजक एवं ज्ञानवर्द्धक हैं। इसके अतिरिक्त पत्रिका में विभिन्न कार्यकमों की झलक भी चित्रों के माध्यम से दी गई है, जो कार्यालय के कार्मिकों की कियाशीलता दर्शाती हैं। हम आशा करते हैं कि भविष्य में भी आप अपनी पत्रिका भेजकर हमें अनुग्रहित करेंगे।

संपादक मंडल एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय,

(डी.के.मिश्र)
अपर ~~आयुक्त~~ आयुक्त

परिणीता

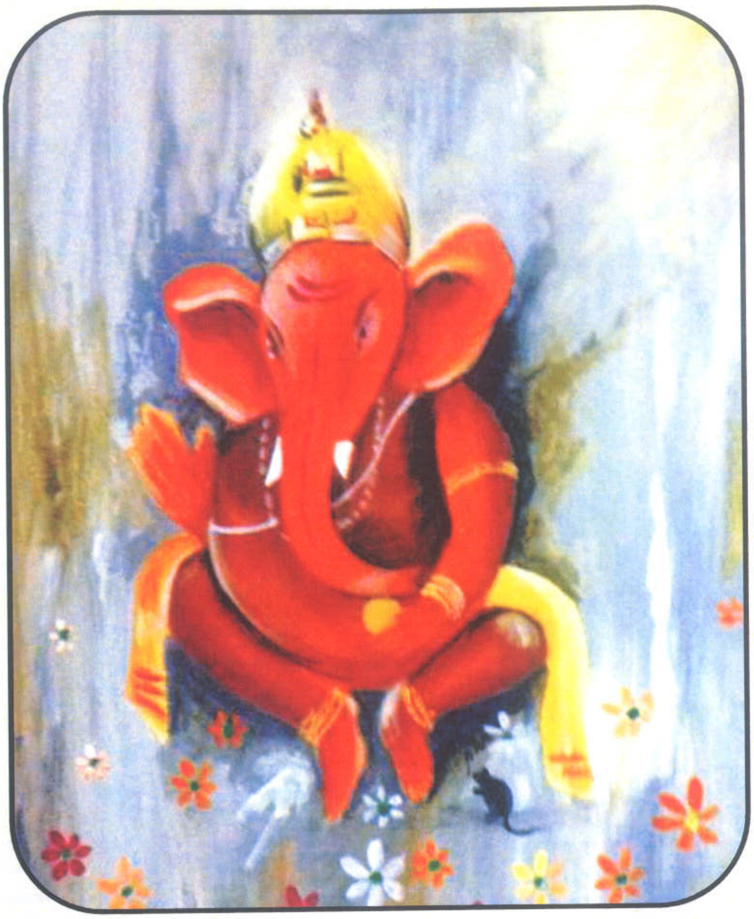

कुमारी परिणीता सुपुत्री श्रीमती डी.वी.एस.आर.एल. रेखा,
अपर मुख्य अभियंता, हैदराबाद कार्यालय द्वारा बनाई गई चित्रकारियाँ

क्या किया आज तक क्या पाया?

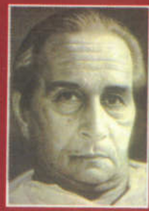

हरिशंकर परसाई
(22 अगस्त 1924 से 10 अगस्त 1995)

मैं सोच रहा, सिर पर अपार
दिन, मास, वर्ष का धरे भार
पल, प्रतिपल का अंबार लगा
आखिर पाया तो क्या पाया ?

जब तान छिड़ी, मैं बोल उठा
जब थाप पड़ी, पग डोल उठा
औरों के स्वर में स्वर भर कर
अब तक गाया तो क्या गाया ?

सब लुटा विश्व को रंक हुआ
रीता तब मेरा अंक हुआ
दाता से फिर याचक बनकर
कण-कण पाया तो क्या पाया ?

जिस ओर उठी अंगुली जग की
उस ओर मुड़ी गति भी पग की
जग के अंचल से बंधा हुआ
खिंचता आया तो क्या आया ?

जो वर्तमान ने उगल दिया
उसको भविष्य ने निगल लिया
है ज्ञान, सत्य ही श्रेष्ठ किंतु
जूठन खाया तो क्या खाया ?

वाप्कोस लिमिटेड
WAPCOS LIMITED
(भारत सरकार का उपक्रम)
जल संसाधन, नदी विकास व गंगा संरक्षण मंत्रालय
पंजीकृत कार्यालय : 'कैलाश', 5वां तल, 26 कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली–110001
दूरभाष : 011–23313131–3, फैक्स : 011–23313134
निगमित कार्यालय : 76–सी, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर–18, गुड़गांव–122 015 (हरियाणा)
दूरभाष : 0124–2340548 फैक्स : 0124–2397392
ई–मेल : hindi@wapcos.co.in वेबसाईट : www.wapcos.co.in